KPT
KUMAWAT
PRAGATI TRUST

2 गज दूरी
मास्क जरूरी

मासिक

कुमावत इंडिया

कुमावत प्रगति ट्रस्ट की सामाजिक पत्रिका

Email : kumawatindiapatrika@gmail.com

वर्ष-4 | अंक-4 नवम्बर-2020 पृष्ठ-32 मूल्य : ₹ 20.00

अयोध्या में श्री राम मंदिर शिलान्यास के बाद दीपावली पर

5 लाख 84 हजार 572 दीये

प्रज्वल्लित कर विश्व कीर्तिमान बनाया।

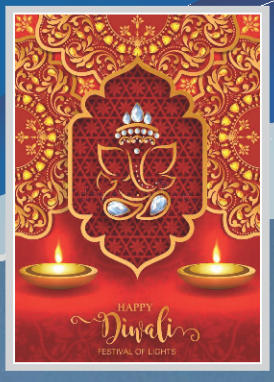

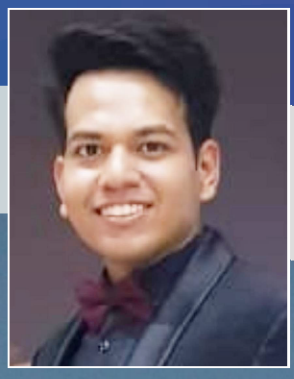

Subhkaran G. Kirodiwal
Mob. : 9898097444

Ashutosh S. Kirodiwal
8758021222

GENIUS INTERNATIONAL

AMBICA DEVELOPERS

GENIUS TEXTILES

901 to 906, 9th Floor, Opp. Shivanjali Row House Patel Wadi No. 3, Lal Darwaja, Surat-395004

कुमावत प्रगति ट्रस्ट

पता : 2806, खड़गटा भवन,गणेश जी मंदिर के पास,
मोती डूंगरी, जयपुर-302004

मुख्य संरक्षक	:	सुरेन्द्र कुमार वर्मा (नागा)	मो. 9414994006
अध्यक्ष	:	रमेश कुमावत (गेदर)	मो. 9414554322
उपाध्यक्ष	:	रामप्रकाश कुमावत एडवोकेट	मो. 9887440666
सचिव	:	विनोद बालोदिया	मो. 9829059312
कोषाध्यक्ष	:	लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल	मो. 9549656438
सदस्य ट्रस्टी	:	सी.एम. कुमावत (बड़ीवाल)	मो. 9829056063
		हेमचन्द खड़गटा	मो. 9351682036
		मनोज सिरस्वा	मो. 9414043127
		रामप्रकाश कुमावत (मारवाल)	मो. 9414074376
		जयकिशन सोकिल	मो. 9829125428
सलाहकार	:	गिरधारी लाल सिंघनवाल	मो. 9414263429

सम्पादक मण्डल : रामप्रकाश कुमावत (मारवाल) सम्पादक - 9414074376, श्रीमती भारती वर्मा सह-सम्पादक 9414810584, राजेन्द्र जूनवाल 9828139099, गौरव अजमेरा 9829488824, प्रमोद कुण्डलवाल 9414362169 **पदेन सदस्य :** अध्यक्ष, सचिव एवं प्रकाशक।

व्यवस्थापक मण्डल : महेश चन्द जलान्धरा 9828118789, चन्द्र प्रकाश अजमेरा 9928088815, लालचन्द धुंधारिया 9413335998, सुरेन्द्र मारोठिया 9314820385, रोहित कुमावत (मोरवाल) 9887097092, राजेश धुंधारिया 9314506330, राजेश कुमावत (मरोडिया) 9829097496 , चेतन बालोदिया 9414052736 एवं श्रीमती राजबाला बिर्थला 7976475370, प्रभुदयाल तुनगरिया किशनगढ़ 9680931428

पत्रिका सहयोगी :

छत्तीसगढ़ : रमेश कुमार तुनवाल **मो. 9425234397 दिल्ली :** राधेश्याम घासोलिया **मो. 9818711580 सूरत :** शुभकरण किरोड़ीवाल **मो. 9898097444 वापी :** कृष्णगोपाल **मो. 9824892299 मुम्बई :** विजय किरोड़ीवाल, **मो. 9867177188 जींद (हरियाणा) :** बलवीर सिंह वर्मा **मो. 9355322301 कोटा :** चन्द्र प्रकाश कांकर **मो. 9214983402 सीकर :** रामगोपाल भोड़ीवाल **मो. 9610784657 उदयपुर :** घनश्याम पटवा **मो. 9460913044 ब्यावर :** नरेन्द्र आर्य **मो. 8107944493 किशनगढ़ :** नन्दकिशोर पारमवाल **मो. 9667090499 बगरू :** चेनसुख बड़ीवाल **मो. 9929012957 सांगानेर :** सोहनलाल अजमेरा **मो. 9636860812**

प्रोसेसिंग व मुद्रक : राज ब्लॉक्स, चौड़ा रास्ता, जयपुर

सदस्यता शुल्क रु. : विशिष्ठ संरक्षक- 5000, संरक्षक-3000, 10 वर्षीय-1300 एवं 5 वर्षीय-600

विज्ञापन दरें : अंतिम कवर पृष्ठ-3500, कवर पृष्ठ अन्दर, 3000, अन्दर 1 पृष्ठ-2500, 1/2 पृष्ठ-1300, 1/4 पृष्ठ-700

नोट 1 : संरक्षक सदस्य को आजीवन (25 वर्ष) तक पत्रिका प्रेषित व 1 बार मय फोटो परिचय प्रकाशन, विशिष्ठ संरक्षक का आजीवन पत्रिका व प्रत्येक अंक में 10 वर्ष तक नाम का प्रकाशन।

नोट 2. 12 विज्ञापन निरन्तर देने पर 2 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किये जायेंगे। 6 विज्ञापन निरन्तर देने पर 1 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किया जायेगा।

बैंक खाता : कुमावत प्रगति ट्रस्ट, संख्या 13850110020562 यूको बैंक, गांधी सर्किल, जयपुर, IFS Code : UCBA0001385

यदि राशि सीधे बैंक खाते में स्लिप/ऑनलाइन जमा कराई गई है तो कृपया व्हाट्सएप नं. 9549656438पर सूचित अवश्य करें।

स्वत्वाधिकार : कुमावत प्रगति ट्रस्ट के लिए प्रकाशक, मुद्रक हेमचन्द कुमावत (खड़गटा) द्वारा राज ब्लॉक्स, बी-81, करतारपुरा इण्डस्ट्रीयल एरिया, 22 गोदाम, जयपुर से मुद्रित एवं 2806, खड़गटा भवन, गणेश जी मंदिर के पास, मोती डूंगरी, जयपुर से प्रकाशित सम्पादक राम प्रकाश कुमावत (मारवाल)

सम्पादकीय

आप तक यह अंक पहुँचने से पूर्व आप सभी दिपावली का त्यौहार पूर्ण उल्लास से मना चुके होंगे। कोरोना के आभामण्डल में बिना पटाखे के राजस्थान में दिपावली पूर्व की भांति नहीं होकर सादगी से मनाई गई होगी। परन्तु इसका सकारात्मक पहलू भी रहा-(1) प्रदूषण नहीं हुआ (2) आगजनी व दुर्घटनाएं नहीं हुई एवं (3) अनुत्पादक खर्चे नहीं हुए। वैसे भी दीपावली का त्यौहार वनवास से श्रीराम की वापसी पर दीपक जलाकर उनके स्वागत में मनाये जाता था। कालान्तर में न जाने पटाखे व आतिशबाजी कब से इसमें जुड़ गई, फिर चाइनीज झालरे व लाइटें इसमें जुड़कर इस त्यौहार का विकृत रूप ले आई। अच्छा हुआ इस बार लोग इनसे विरत रहे। हो सकता है बच्चों व समाज के कुछ वर्गों को यह ठीक नहीं लगा होगा। किन्तु पटाखे से होने वाले ध्वनी प्रदूषण व वायु प्रदूषण से बुजुर्ग, बीमार व बच्चें इस बार बचे रहे। प्रदूषण का स्तर बढ़ने पर कोरोना का प्रकोप भी बढ़ सकता था।

राजस्थान में 4 नगर निगमों के चुनाव सम्पन्न हो चुके हैं। कोटा व जोधपुर में तो कुमावत समाज के किसी उम्मीदवार को प्रमुख राजनैतिक पार्टियों ने उम्मीदवार योग्य ही नहीं माना। जयपुर में हेरीटेज व ग्रेटर नगर निगम के लिए दोनों पार्टियों ने कुल 12-13 उम्मीदवारों को टिकिट दिये। यद्यपि हमारी जनसंख्या की तुलना में कम थे तथा जहाँ हमारे समाज का बाहुल्य था वहाँ से भी अन्य समाज के लोगों को टिकिट देकर हमें उपेक्षित किया गया। पर इनमें से केवल 3 उम्मीदवार ही जीत पाये, यह हमारे समाज की एकता व संगठन शक्ति की घोर पराजय है। हम समाज के उम्मीदवार को वोट व समर्थन नहीं दे पाये तथा राजनैतिक मानसिकता के गुलाम होकर अन्य को वोट किया। इससे कुमावत बाहुल्य क्षेत्र झोटवाड़ा, सांगानेर, मानसरोवर व लालकोठी स्कीम में हमारे समाज के अच्छे उम्मीदवार भी नहीं जीत पाये। इससे वर्तमान में ही नहीं अपितु भविष्य के लिए भी राजनैतिक हानि, जाने-अनजाने में हो गई। अब यहाँ से भविष्य में राजनैतिक दल क्यों हमारे समाज के लोगों को टिकिट देंगे ? अगर हम यहां से जीतते तो हमारे उम्मीदवार राजनैतिक संस्थाओं में पहुंचकर हमारे अपने लोगों के काम करा सकते थे तथा उनसे प्रेरणा लेकर समाज के और लोग राजनीति में आते तथा ये स्थान तो समाज के लिए पक्के हो जाते।

राजस्थान के पंच-सरपंच चुनावों में इससे बेहतर प्रदर्शन समाज के लोग कर पाये। अब अन्य नगरीय निकाय के चुनाव राजस्थान में होने जा रहे हैं। यदि समाज अब भी नहीं जगा, संगठित न हुआ तथा सामाजिक एकता कायम नहीं की तो वहां क्या परिणाम होगा ? आप सोच सकते हैं। अत: आपसी मतभेद भुलायें, टांग खिंचाई छोड़े, पार्टियों का पिछलग्गू बनना छोड़े व समाज का परचम उठायें। तब ही राजनैतिक दल हमारे समाज का लोहा मानेंगे व हमारे संगठित प्रयास हमारे समाज के उम्मीदवार (चाहे वह किसी भी पार्टी या निदर्लीय चुनाव लड़े) को जीताकर ला पायेंगे। हमें जाट, मीणा, गुर्जर, ब्राह्मण, वर्णिक तथा अनुसूचित जातियों के समाजों से सीखना होगा जो अपनी जाति के उम्मीदवारों को जी-जान से जितवाने के लिए आपसी मतभेद भुला देते हैं व राजनैतिक विचारधारा से प्रभावित नहीं होते।

- रामप्रकाश कुमावत (मारवाल)

यहां पर यह देखें

सम्पादकीय	3
संरक्षक : श्री सीताराम कुमावत, श्री सुरेन्द्र कुमार जायलवाल, श्री मातुराम कुमावत	4
कुमावत गौरव : श्री भींवाराम श्री पन्नालाल कुमावत	5
राजस्थान फैशन अवार्ड से सम्मानित	5
स्मृति शेष : अद्भुत कलाकार : स्व. श्री लाल चन्द मारोटिया	6
कुमावत कबड्डी प्रतियोगिता : छोटी सादड़ी	7
जेट-2020 में प्रथम रैंक प्राप्त छात्रा मनीषा कुमावत का सम्मान	7
कवि तुलसीराम राजस्थानी को काव्य रत्न सम्मान	7
प्रभुदयाल कुमावत का अनूठा प्रचार	7
युवराज को बेस्ट जर्नलिस्ट अवार्ड	7
जयपुर नगर निगम चुनाव 2020	8
दुर्घटना के बाद मदद करने वाले से नहीं होगी पूछताछ	8
अपील	8
जयपुर के स्थापना दिवस पर विशेष	9
ज्योति शिक्षण संस्थान, उदयपुर की 2 बलिका चयनित	9
हिम्मत अभिलाष टांक एसपी सिरोही	9
अनिरुद्ध सिंह को गोल्ड मेडल	9
पाठक प्रतिक्रिया	9
युवापीढ़ी के लिए विशेष : कर लो दुनिया मुट्ठी में-क्या सही है ?	10
ये सिर्फ देते हैं	10
कुमावत समाज के पिछड़ेपन का कारण	11
कुंडली मिलान व समाज की वेदना	12
कुमावत इंडिया पत्रिका परिवार-एक प्रयास	13
उप-सरपंच दम्पत्ति	14
अयोध्या में अलौकिक दीवाली	15
बेटी के बांधी गई पगड़ी	15
मदनगंज किशनगढ़ में इलेक्ट्रोपैथी शिविर का आयोजन	15
पत्रकार श्री मनोहर लाल कुमावत सम्मानित	15
बूंदी में रक्तदान शिविर 101 यूनिट संग्रहित	16
मनीष कुमावत, रामबाग गोल्फ क्लब के कार्यकारिणी सदस्य निर्वाचित	16
भोपा का बास में हुआ शिविर, 201 यूनिट किया रक्त संग्रहित	16
जयपुर में जीते तीनों पार्षदों का सम्मान	17
टीम चेतन धुंधारिया के लोगो का विमोचन	17
विज्ञापन : श्रद्धांजलि	17
विज्ञापन : श्रद्धांजलि/आभार श्री सालगराम वर्मा, श्री चन्द्र प्रकाश कुमावत	18
मुफ्त की चीजें जीवन का मार्ग भटका सकती है	19
कुमावत समाज की देन : 8वीं सदी से स्थापत्य, शिल्प कला व मूर्तिकला	20
बहस : भात और दहेज की प्रासंगिकता	21
एक बहस : दहेज तथा भात प्रथा का औचित्य	22
अजमेरा परिवारों का नववर्ष स्नेह मिलन	22
सुदामा को गरीबी क्यों मिली	23
हमारे धर्म ग्रंथ ज्ञान का भंडार	23
विशिष्ट संरक्षक	24
विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची	25
'कुमावत इंडिया' पत्रिका नहीं मिलने पर यहां सम्पर्क करें	26
विज्ञान : बधाई श्री अनिल-मनीषा, श्री दामोदर कुमावत	27
विज्ञापन : बधाई	28
विज्ञापन : श्रद्धांजलि	29
विज्ञापन : बधाई	30

संरक्षक

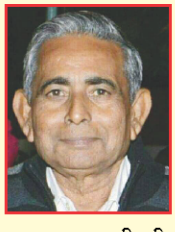

श्री सीताराम कुमावत (रेवाड़िया)

11ए, केशव विहार विस्तार, अरिहंत पथ, रिद्धी-सिद्धी चौराहा, गोपालपुरा बाईपास (देवरी), जयपुर-302015

मो.नं. 9460718449, 9414079997

श्री सीताराम कुमावत मूलत: अचरोल, दिल्ली रोड, जयपुर के निवासी हैं। आप जयपुर विद्युत वितरण निगम से सेवानिवृत्त वरिष्ठ लिपिक हैं। अचरोल में आप द्वारा यूको बैंक को भवन किराए पर दिया हुआ है। आपके बड़े पुत्र श्री राजेश, कुमावत एसोसिएट्स के नाम से रिद्धि-सिद्धि चौराहे के पास, जयपुर में आर्किटेक्ट फर्म का संचालन कर रहे हैं तथा छोटे पुत्र श्रीदत्त अचरोल में रिद्धि-सिद्धि डिपार्टमेंटल स्टोर का सफल संचालन कर रहे हैं। आपकी दो विवाहित पुत्रियां हैं। आप सरल एवं मृदु स्वभाव के हैं तथा सेवानिवृत्ति के बाद अधिकांशत: अचरोल में निवास कर रहे हैं। 'कुमावत इंडिया' पत्रिका आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है।

श्री सुरेंद्र कुमार जायलवाल

(पुत्र श्री ओम प्रकाश)

24, गायत्री नगर रीको-II, ब्यावर, मो. 9530490436

आपका ब्यावर में ओम शांति मैरिज गार्डन एवं मिनरल ग्राइंडिंग प्लांट है। आप कुमावत विकास संघ, ब्यावर के अध्यक्ष है। आप कुमावत पंचायत सभा ब्यावर के पूर्व अध्यक्ष रहे है। आप सामाजिक क्षेत्र में सेवाएं देते रहे हैं व मृदु स्वभाव के धनी है। आपका एक पुत्र निपुण कुमावत वापी में कारोबार कर रहा है। आपकी दो बेटियां है, आपके दामाद श्री श्रीकांत कुमावत परिवहन विभाग में निरीक्षक है। आपकी छोटी बेटी इंटीरियर डेकोरेशन कोर्स में अध्ययनरत है।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका आपके और आपके परिवार के उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

श्री मातुराम कुमावत (होदकास्या)

मातुराम आर्ट्स सेन्टर, लुहारू रोड, पिलानी-333031

आप वरिष्ठ मूर्तिकार हैं, आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से चित्रकला में स्नातक किया व आई जी डी मुंबई से चित्रकला में डिप्लोमा किया। आपने प्रसिद्ध चित्रकार श्री भूरसिंह से चित्रकला की बारीकियां सीखी। आपने मारिशस, भूटान नेपाल, कनाडा आदि देशों में सैकड़ों फुट ऊंची प्रतिमाएं बना कर हिन्दू संस्कृति की अभिवृद्धि विदेशो में की है। आप द्वारा नाथद्वारा में 351 फुट ऊंची शिव प्रतिमा बनाई गई है। आप राष्ट्रपति से सम्मानित है। आपको अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार वर्ष 2008 में मारिशस से, 2010 में नेपाल में शिव प्रतिमा बनाने पर दिया गया। बिरला परिवार द्वारा 1994 में ताम्र पत्र व वर्ष 2009 में रजत पत्र दे कर सम्मानित किया गया। आपके पुत्र श्री नरेश कुमावत अयोध्या में सरयु तट पर श्रीराम की 250 फिट ऊँची प्रतिमा का निर्माण कर रहे हैं। 'कुमावत इंडिया पत्रिका' आपके उज्जवल भविष्य की कामना करती हैं।

श्री भींवाराम श्री पन्नालाल कुमावत

कुमावत समाज में 25-30 वर्ष से आप दोनों भाईयों की जुगल जोड़ी राम-लक्ष्मण की तरह समाज सेवा कर रहे हैं। यहां हम इन दोनों भाईयों के बारे में चर्चा कर रहे हैं :

श्री भींवाराम दम्बीवाल : बड़े भ्राता श्री भींवाराम 60-62 वर्ष पूर्व ग्राम अणतपुरा जिला जयपुर में पिता श्री बालूराम माता श्रीमती छोटा देवी दम्बीवाल के परिवार में जन्म हुआ। सैकेण्डरी तक शिक्षा के बाद सन् 1972 से 5-6 वर्ष तक जोधपुर माईनिंग का कार्य सफलता पूर्वक किया।

श्री पन्नालाल सिरस्वा : श्री पन्नालाल जी का जन्म ग्राम आसलपुर खातलियों की ढाणी, जिला जयपुर में माता श्रीमती चुन्नी देवी, पिता श्री मोतीलाल जी सिरसवा के परिवार में 8 नवम्बर, 1963 को हुआ। ग्राम से 8वीं तक शिक्षा व बाद में सैकेण्डरी तक शिक्षा प्राप्त कर खेती का कार्य किया।

सन् 1979-80 के मध्य दोनों भ्राता जयपुर आ गये और नमक की मण्डी में रह कर भवन निर्माण कारीगरी का कार्य किया। सन् 2001-02 में श्री पन्नालाल जी ग्राम पंचायत में सरपंच के पद को भी सुशोभित किया। दोनों भाईयों ने सन् 1981-82 में **मैसर्स भींवाराम पन्नालाल कंस्ट्रक्शन कम्पनी** बनाकर भवन निर्माण की ठेकेदारी का कार्य किया फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। आपकी कम्पनी को बहुमंजिला भवन एवं मल्टीप्लैक्स निर्माण में राजस्थान में विशेषज्ञता प्राप्त है। आपके पास भवन निर्माण सम्बन्धी सभी संसाधन, बहुमूल्य यंत्र व मजदूर उपलब्ध हैं। आपकी कम्पनी द्वारा करोड़ों रुपए का निर्माण कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न किये जा चुके हैं। आपके द्वारा समयबद्ध रूप से गुणवत्ता के साथ अब तक सभी निर्माण कार्य पूरे किये गये हैं। वर्तमान में लगभग 3-4 हजार कारीगर, मजदूर, इंजीनियर आपके यहां कार्यरत हैं। इस कार्य में आपने परिवारजनों, समाज बन्धुओं को बहुत महत्व दिया है तथा आप द्वारा उन्हें रोजगार उपलब्ध कराकर उपकृत किया है।

सामाजिक कार्य : आप दोनों भ्राता प्रारम्भ से ही दानदाता रहे हैं। आपने द्वार पर आये हुए को कभी निराश नहीं किया। आपने 20 वर्षों से लाखों रुपया समाज में दान दिया है। **समाज का कुमावत विद्यालय भवन, भन्दे बालाजी में 5 बीघा जमीन में नई धर्मशाला निर्माण, मालविया नगर समाज भवन, बरकत नगर समाज भवन, पुष्कर समाज मन्दिर आदि उसके उदाहरण हैं।** समाज के सभी सामुहिक विवाहों में आपने लाखों रुपयों का योगदान दिया है। नि:संदेह आप दोनों समाज के भामाशाह है। दोनों भ्राता जयपुर की पॉश कॉलोनी निर्माण नगर में पास-पास निवास कर रहे हैं।

श्री भींवाराम जी के दो वैवाहित पुत्रियां तथा अविवाहित पुत्र है। बड़े पुत्र सिविल इंजी. कर चुके हैं। श्री पन्नालाल जी के एक विवाहित पुत्री तथा दो विवाहित पुत्र हैं। आपका ऑफिस एलिमेंट मॉल, डीसीएम अजमेर रोड, जयपुर में है। दोनों भ्राता 'कुमावत इंडिया' पत्रिका के प्रारम्भ से ही वरिष्ठ संरक्षक हैं। **'कुमावत इंडिया' पत्रिका परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।**

राजस्थान फैशन अवार्ड से सम्मानित

जेम स्टोन कार्विंग में अपनी खास पहचान बनाने वाले अमृत सिरोहिया, 'राजस्थान फैशन अवार्ड' से 25 अक्टूबर 2020 को जयपुर के जीक्लब होटल में सम्मानित हुए। फेमिना मिस इंडिया और एक्ट्रेस पूजा चोपड़ा ने प्रतिस्पर्धा में भाग लेने वाले कलाकारों को सम्मानित किया। जेम स्टोन कार्विंग ज्वेलरी डिजाइन के लिए अमृत सिरोहिया को यह सम्मान मिला।

अमृत सिरोहिया पहले भी नेशनल अवार्ड और महाराणा सज्जन सिंह मेवाड़ अवार्ड से सम्मानित हो चुके हैं। आप द्वारा मूल्यवान व अर्द्धमूल्यवान स्टोन पर मूर्तिशिल्प, डेकोरेटिव आइटम्स व ज्वेलरी की अनुपम कलाकृतियां बनाई जाती रही है।

अद्‌भुत कलाकार : स्व. श्री लाल चन्द मारोठिया

निवास ए-5, गंगा मार्ग, कुमावत बाड़ी, खातीपुरा, जयपुर

श्री लाल चन्द मारोठिया का जन्म 8 सितम्बर, 1949 को जयपुर में माता श्रीमती गौरादेवी व पिता श्री हीरालाल मारोठिया के परिवार में हुआ। आपके पिता भवन निर्माण तथा अराईश की गई दीवारों पर सुन्दर चित्र बनाने में निपुण थे। किन्तु श्री लालचन्द के जन्म के 3 माह बाद ही पिता का साया उठ गया व इनकी ममतामयी माँ ने ही इनका व 3 बड़ी बहिनों का विषम परिस्थितियों में खेतीबाड़ी से पालन पोषण किया। **आपने वर्ष 1966 में राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स, जयपुर में 5 वर्षीय पाठ्यक्रम में दाखिला लिया। आपका विषय चित्रकला था तथा 3 वर्ष में ही इसे पूरा कर लिया।**

अवार्ड : राजस्थान ललित कला अकादमी, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप, AIFACS & Crators, Ambala

योगदान : आपने राजस्थान ललित कला अकादमी तथा AIFACS & Progresive Artist Group की कला प्रदर्शनियों व आर्ट कैम्पों में भाग लिया। आपकी कलाकृतियां राजस्थान ललित कला अकादमी, RTDC, कृषि भवन तथा जवाहर कला केन्द्र में लगी हुई हैं।

राज्य सेवा : आप वर्ष 1970 में परिवार नियोजन, चिकित्सा व स्वास्थ्य विभाग में आर्टिस्ट के पद पर नियुक्त किये गये। बाद में वर्ष 1976 में आपका स्थानान्तरण कृषि विभाग में हो गया जहाँ से आप वर्ष 2009 में सेवानिवृत्त हुए।

पुस्तक लेखन : पेड़ बोलते हैं, प्रकृति के नये आयाम, प्रकृति का अद्‌भुत चितेरा लालचन्द मारोठिया (शोध ग्रन्थ)

आपकी पत्नी रतन देवी धर्मपरायण महिला है जिन्हें अपनी सास श्रीमती गौरा देवी से अच्छे संस्कार मिले। घर में प्रात:काल नियमित रूप से रामचरित मानस की चौपाईयां का सुमधुरपाठ से घर के सदस्यों की नींद खुलती है। आपकी 4 सन्तानों में पुत्र श्री गोपालन (प्राइवेट इंश्योरेंस कं.) व श्री देवकीनन्दन (वीडियोकोन) तथा पुत्री श्रीमती किरण कला (धर्मपत्नी ताराचन्द सिरोहिया) एवं स्व. चित्रकला चित्रा (धर्मपत्नी श्री अजय वर्मा, अनावड़िया) हैं।

श्री लाल चन्द मारोठिया की कलाकार के रूप में पहचान शिक्षक मोहन शर्मा के कारण हुई। उनसे रंगों में फ्यूजन और फिनिशिंग उनसे मिली। आपने पहली प्रदर्शनी 19 वर्ष की आयु में छात्र के रूप में 1968 में सूचना केन्द्र में लगाई जिसमें लैण्डस्केप, स्केच, पोट्रेट और मिनियेचर शैली के चित्र थे। जिसे शिक्षकों व कला प्रेमियों ने सराहा

1976 में 'पेग' (प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप) ग्रुप की सदस्यता ली, जो अंत तक चली। इसमें सेमीनार, कला गोष्ठियां और कला पर चर्चायें समयबद्ध रूप से होती हैं।

मारोठिया आधारभूत रूप से लैण्डस्केप के चितेरे हैं। इन्हें प्रकृति के रंग रूपाकारों को सर्वमान्य यथार्थ से कुछ भिन्न करके देखने की सृजनात्मक दृष्टि प्राप्त थी।

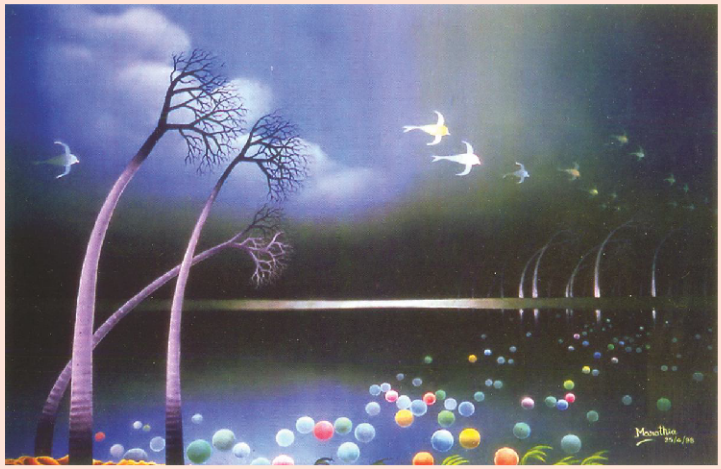

'पेड़ बोलते हैं' उनकी लघु पुस्तिका ब्लैक एण्ड व्हाइट कलम से आप सिद्धहस्त कलाकारों में अपना अग्रणीय स्थान बनाने में सफल रहे।

आपके चित्रों में बादलों से आच्छादित आकाश, वहीं धरती के पानी और आकाश को विभाजित करने वाली एक क्षितिज रेखा, कभी बड़े, ऊँचे पेड़ तो कभी छोटे व बोने पेड़ हैं। इनके चित्रों में पेड़ों को, कटी हुई धरती पर उगा तो कभी निष्प्राण सा पानी में गिरा हुआ देखते हैं। छोटे-छोटे रंगबिरंगे पत्थरों का चित्रों में समावेश बड़ी ही खूबसूरती से किया है।

शेष पृष्ठ 19 पर ...

कुमावत कबड्डी प्रतियोगिता : छोटी सादड़ी

निकटवर्ती गोमाना गांव में क्षत्रिय कुमावत समाज द्वारा **कबड्डी प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का समापन कुमावत समाज के कालूलाल कुमावत के मुख्य अतिथि व बिरला चेतक सीमेंट चित्तौड़गढ़ के बलवंत राठौर के विशिष्ट आथित्य में सम्पन्न हुआ। कुमावत समाज गोमाना द्वारा आयोजित कबड्डी प्रतियोगिता में 13 टीमों ने भाग लिया। कबड्डी प्रतियोगिता का फाइनल मुकाबला गोमाना और बिलोट के बीच हुआ जिसमें बिलोट की टीम विजय रही। विजेता टीम को मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथि द्वारा प्रथम पुरस्कार 7777 रुपए की राशि प्रदान की गई। वहीं, द्वितीय विजेता गोमाना टीम को 3333 रुपये की नगद राशि प्रदान की गई। विजेता टीम के खिलाड़ियों को बिरला चेतक सीमेंट कंपनी द्वारा विशेष पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर कुमावत समाज के भामाशाह और आयोजक समिति के मनोहर लाल, पुष्कर, अशोक, भरत, संजय कुमार, रंगलाल, हेमराज आदि वरिष्ठ समाज बंधुओं ने भाग लिया।

जेट-2020 में प्रथम रैंक प्राप्त छात्रा मनीषा कुमावत का सम्मान

कृषि विश्वविद्यलय कोटा द्वारा जारी जेट-2020 परीक्षा परिणाम में ऑल राजस्थान में प्रथम रैंक प्राप्त करने वाली छात्रा मनीषा कुमावत पुत्री रामकरण कुमावत निवासी ढाणी नागान, जोबनेर जिला जयपुर का कुमावत नवचेतना समिति, जोबनेर की ओर से सम्मान किया गया।

सम्मान के रूप में मनीषा को प्रमाण-पत्र और 5100 रुपए का चैक प्रदान किया गया। समिति के संरक्षक सदस्य सांवर मल कुमावत ने इस अवसर पर कहा कि मनीषा ने यह सफलता अर्जित कर अपने परिवार और कुमावत समाज का नाम रोशन किया है। उनकी ये सफलता अन्य बालिकाओं के लिए प्रेरणादायक होगी। इस अवसर पर समिति की ओर से छात्र मनीषा कुमावत की आगे की शिक्षा के लिए नि:शुल्क पुस्तकें देने की घोषणा की गई।

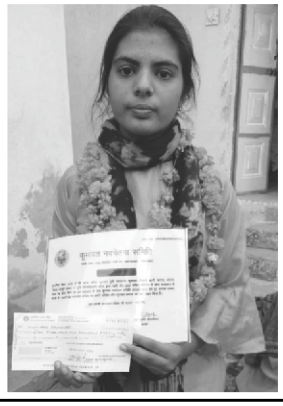

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से मनीषा कुमावत को बधाई एवं शुभकामनाएं।

कवि तुलसीराम राजस्थानी को काव्य रत्न सम्मान

अखिल भारतीय कवि मंच के तत्वाधान में आयोजित साप्ताहिक काव्य प्रतियोगिता में कवि तुलसीराम राजस्थानी की काव्य रचना 'वाह वाह क्या बात है' को अखिल भारतीय स्तर पर उत्कृष्ट रचना के रूप में चयनित किया गया। कवि तुलसीराम राजस्थानी को काव्य रत्न सम्मान से अलंकृत किया गया है।

आपको साहित्य संगम संस्थान बिहार इकाई द्वारा 'बेरोजगारी की पीढ़ा' श्रेष्ठ सृजन के लिए 'श्रेष्ठ रचनाकार' के सम्मान से विभूषित किया गया है। इसी प्रकार आपको दिल्ली इकाई द्वारा भी श्रेष्ठ रचनाकार के सम्मान से अलंकृत किया गया है।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से श्री तुलसीराम राजस्थानी को बधाई।

प्रभुदयाल कुमावत का अनूठा प्रचार

श्री प्रभुदयाल कुमावत, नि. किशनगढ़ द्वारा 'कुमावत इंडिया' पत्रिका के व्यवस्थापक बनाये जाने के बाद अपनी मोटरसाईकिल पर अनूठे तरीके से प्रचार का तरीका इजाद किया। इन्होंने अपनी मोटर साइकिल की हैड लाईट पर पत्रिका का नाम लिखवाया है। आप औजस्वी सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

युवराज को बेस्ट जर्नलिस्ट अवार्ड

युवराज कुमावत द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ (UN) के एजेंडा पर अपने अपने देशों की तरफ से रखे गए उत्कृष्टता विचारों के लिए 'बेस्ट जर्नलिस्ट' के पुरस्कार से नवाजा गया है।

युवराज कुमावत को सम्मानित किए जाने पर **'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से बधाई व शुभकामना।**

जयपुर नगर निगम चुनाव 2020

स्थानीय चुनावों के इतिहास में बीजेपी तथा कांग्रेस ने 6-6 टिकट समाज बन्धुओं ने अपने स्तर पर प्राप्त कर बहुत बड़ी उपलब्धि अर्जित की थी। परन्तु दु:ख के साथ लिखना पड़ रहा है कि हमारे समाज बन्धुओं, व्यापारियों, उद्योगपतियों, ठेकेदार भाईयों ने नहीं के बराबर सहयोग किया। सिर्फ 2-3 स्थानों पर कुछ सहयोग प्राप्त हुआ। 2-3 स्थानों पर हमारे समाज के प्रत्याशी के विरुद्ध ही समाज के प्रत्याशी ही निर्दलीय रूप से मैदान में उतर गये तथा कुछ स्थानों पर हमारे प्रत्याशियों का हमारे ही समाज बन्धुओं ने विरोध किया। इन सब बातों के कारण जयपुर हेरिटेज वार्ड नं. 48 से श्री राजेश धुंधारिया (नन्दपुरी, 22 गोदाम), श्रीमती कपिला कुमावत धर्मपत्नी श्री विजयपाल मारवाल जयपुर हेरिटेज वार्ड 59, (पुरानी बस्ती, शहर) तथा वार्ड नं. 135 ग्रेटर से निर्दलीय श्री राजेश बालोदिया (बरकत नगर) से जीत दर्ज करा पाये।

समाज के 7-8 निर्दलीय खड़े होकर हिम्मत दिखाई, बहुत अच्छा प्रदर्शन किया परन्तु समाज का साथ कम मिला। मालवीय नगर से समाज सेवी श्री भागचन्द बैरा ने 64-65 वर्ष की उम्र में निर्दलीय खड़े होना नवयुवकों को प्रेरणा देता रहेगा जहां समाज का बाहुल्य भी नहीं है। 10 वर्ष पूर्व मालवीय नगर से श्री संजय वर्मा (सुपुत्र श्री भागीरथ जी लोरवाडिया) कांग्रेस के टिकट पर पार्षद चुने गये थे, जहां समाज के 100 वोट से अधिक नहीं थे। उसी वर्ष समाज बाहुल्य क्षेत्र शास्त्रीनगर, नाहरी के नाका से कांग्रेस के श्री उत्तम कुमार केवल 15-20 वोटों से पराजित हो गये थे। अब तो वार्ड काफी छोटे हो गये उम्मीदवार सच्चे मन से 3-4 वर्ष सेवा करें तो उसे कोई नहीं हरा सकता।

हमारे समाजबंधु वर्षों से बीजेपी तथा कांग्रेस की सेवा करते आ रहे हैं। इन दलों ने हमें आज तक क्या दिया? इस वर्ष कुछ टिकट दिए तो हम अपने प्रत्याशी को जीता नहीं पाये। क्योंकि हमारे खून में तो बचपन से बीजेपी तथा कांग्रेस विचारधारा व्याप्त है। परिणामस्वरूप हम अपने ही समाज के प्रत्याशी को वोट एवं समर्थन नहीं देकर हरा देते हैं। जबकि जाट, गुर्जर, मीणा, अग्रवाल, खण्डेलवाल जातियों में वे अपने समाज के प्रत्याशी को जीताने पर जी जान लगा देते हैं चाहे वह किसी भी दल से क्यों न हो। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण मेयर के लिए कांग्रेस प्रत्याशी ज्योती खण्डेलवाल है जिसे वैश्य समाज ने 5 वर्ष पूर्व जीता कर मेयर बनवाया जबकि बीजेपी का बोर्ड बना।

20-25 वर्ष पूर्व आसींद से श्री नानूराम कुमावत कांग्रेस से एमएलए चुने गये थे, फिर उन्हें दुबारा टिकट मिला। चुनाव प्रचार चल रहा था तो चुनाव सभा में तत्कालीन केन्द्रीय मंत्री श्री राजेश पायलेट (गुर्जर) हैलिकाप्टर से आने वाले थे। उनका हेलीकाप्टर आया किन्तु वे आकाश में 2-3 चक्कर लगा कर वापस दिल्ली चले गये और कहा कि मौसम ठीक नहीं था। परन्तु वास्तविकता यह थी कि वे गुर्जर समाज के बीजेपी प्रत्याशी के विरुद्ध यहां प्रचार करना नहीं चाह रहे थे। परिणामत: हमारे नानूराम कुमावत चुनाव हार गये। इससे हम सब को सबक लेना चाहिए कि चुनाव में जातिभाई को जिताए व पार्टी को तरजीह न दें।

-हेमचंद खड़गटा, वरिष्ठ समाज सेवी

दुर्घटना के बाद मदद करने वाले से नहीं होगी पूछताछ

केन्द्र सरकार ने सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति की मदद करने वालों को कानूनी झंझटों से छुटकारा दिलाने के लिए नए नियम जारी कर दिए हैं। नए नियमों के अनुसार लोगों की मदद करने वाले अच्छे नागरिकों के साथ धर्म, जाति और राष्ट्रीयता से ऊपर उठकर सम्मानजनक व्यवहार किया जाएगा।

सड़क परिवहन व राजमार्ग मंत्रालय की ओर से 29 सितम्बर को जारी अधिसूचना के अनुसार अस्पताल या पुलिस अधिकारी द्वारा दुर्घटना के बाद मौके पर मदद करने वाले लोगों को अपना नाम, पता, पहचान, फोन नम्बर या अन्य व्यक्तिगत विवरण देने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकेगा। अस्पतालों को भी प्रवेश द्वार, अपातकालीन सेवा, अपनी वेबसाइट पर एक चार्टर लगाना होगा, जिस पर ऐसे अच्छे नागरिकों के अधिकारों का ब्यौरा देना होगा। इसके लिए मोटर व्हीकल (एमेंडमेंट) एक्ट 2019 में धारा 134 ए को जोड़ा गया है।

नए नियमों के तहत मदद करने वाले व्यक्ति को सुरक्षा दी गई है। इसमें साफ है कि मदद करने वाला व्यक्ति दुर्घटना के शिकार व्यक्ति को पहुंचने वाली किसी चोट या उसकी मौत के लिए जिम्मेदार नहीं माना जाएगा। उसके खिलाफ किसी तरह का सिविल या आपराधिक मामला दर्ज नहीं किया जा सकता है। नए नियमों के लागू होने से सड़क दुर्घटना के शिकार लोगों को तत्काल मदद मिलना संभव होगा और मरने वाले लोगों की संख्या में भी कमी आएगी।

मालवीय नगर, जयपुर

कुमावत समाज भवन निर्माण प्रगति पर

अपील

मालवीय नगर, जयपुर स्थित कुमावत समाज भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है। पिछले वर्ष बेसमेंट फिनिशिंग कार्य कुमावत समाज विकास समिति द्वारा कराया गया तथा इस वर्ष भवन निर्माण समिति द्वारा बंद व अनुपयोगी रहे ट्यूबवेल को चालू कराया, भू-तल की फिनिशिंग कराई गई, प्रथम तल पर स्थित 8 कमरों का प्लास्टर कराया गया है व शेष 5 कमरों में प्लास्टर एवम बाहरी फिनिशिंग इत्यादि कार्य प्रगति पर है।

समाज बन्धुओं से निवेदन है कि भवन को पूर्ण करने हेतु सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन करते हुए यथायोग्य आर्थिक सहयोग देने का कष्ट करें, जिससे कि भवन की फिनिशिंग का कार्य निर्बाध रूप से संपादित हो सके।

निवेदक,

-रमेश कुमावत, अध्यक्ष, कुमावत समाज विकास समिति, मालवीय नगर, जयपुर।

जयपुर के स्थापना दिवस पर विशेष

जयपुर के स्थापना दिवस की वर्षगांठ 17 नवम्बर पर पुराणे जैपुर के कुछ पकवान परोस रहे है जी। थे सब इका घणा घणा आनंद लेवे जी:-

सोंध्या हलवाई को मूंगथाल, फूल जी हलवाई की थाल की गर्रादाल बर्फी, चौड़ा रास्ता के सम्राट के राजभोग, एल. एम. बी. के शुद्ध देशी के घेवर, हल्दियों के रास्ते की सांभर की फिणी, ईश्वरजी, गोपीजी और नारायणजी की गजक, त्रिपोलिया में सरदार जी के समोसे और शर्बत, किशनपोल में खुँटेटा की कचोरी, बैंक वाली गली की ऊँची पेड़ी वाले हलवाई की हींग की कचोरी जो दही के साथ, तहवीलदारों के रास्ता में सम्पत की नमकीन, सोंथली वालों के रास्ता में शंकर नमकीन भंडार की नमकीन, त्रिपोलिया में ठंडी प्याऊ की दाल की पकोडी, नाहरगढ़ रोड पर बूस्या हलवाई की ठंडी कचोरी, खुंटेटों का रास्ता किशनपोल के कलजुगे हलवाई के मिर्ची के टपोरे, भगत मिष्ठान भंडार के शुद्ध देशी घी के लाडु, राष्ट्रीय मिष्ठान भंडार किशनपोल के डालडा के लाडु, त्रिपॉलिया में हनुमान के रास्ता के तेल के लाडु (जयपुर में एक पुराणी कहावत है कि "हनुमान को रस्तो, और पूड़ी सू लाडु सस्तो") रामनिवास बाग में किरण की कुल्फी, सिंधी कैंप पर गुलाब जी की चाय, चौड़ा रास्ता में प्रेम प्रकाश सिनेमा के पास छप्परवाड की चाय, एम. आई. रोड पर लस्सी वाले की दही की लस्सी और उसके सामने मनपसन्द पान और एम. आई. रोड पर कॉफी हाउस की कॉफी तो आनन्द ही कुछ ओर छो। जयपुरी जलेबी खानी है तो चले जाया करते थे चाँदपोल में गोविन्द राव जी के रास्ते की नुक्कड़ वाले हलवाई के, घी वालों के रास्ते में मथुरा चाट वाली की चाट। यदि छप्पन भोग में कुछ घट गया हो तो थे परोसगारी कर दीजो सा।

ज्योति शिक्षण संस्थान, उदयपुर की 2 बलिका चयनित

इंदिरा प्रियदर्शनी पुरस्कार हेतु ज्योजित शिक्षण संस्थान से 2 बालिकाओं का चयन हुआ। इनमें 12वीं की एक बालिका साइंस संकाय व एक बालिका वाणिज्य संकाय से है। बालिकाओं को 1 लाख रुपए व 1 स्कूटी दी जायेगी। ज्योति शिक्षण संस्थान से चयनित बालिकाओं व संस्थान के प्रमुख श्री गिरधारीलाल सिंघनवाल को बधाई।

हिम्मत अभिलाष टांक एसपी सिरोही

श्री हिम्मत अभिलाष टांक का पुलिस अधीक्षक, सिरोही पदस्थापन होने पर 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से बधाई।

अनिरुद्ध सिंह को गोल्ड मेडल

श्री राजेन्द्र प्रसाद खोवाल के पौत्र व श्री अमित कुमार के पुत्र अनिरुद्ध सिंह (कक्षा-4) ने सेन्ट कोंरडस इन्टरकॉलेज के Brainobrain Dudding Artist 2020 के ड्राइंग कम्पीटीशनमें गोल्ड मेडल प्राप्त किया।

अनिरुद्ध कुमावत को 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से बधाई व उज्ज्वल भविष्य की कामना।

पाठक प्रतिक्रिया

सम्पादक महोदय,

मैंने 'कुमावत इंडिया' पत्रिका अक्टूबर-2020 अंक पढ़ा। इस पत्रिका के माध्यम से सामाजिक गतिविधियों की जानकारी, लेख, वैवाहिक जानकारी व प्रतिभाओं का परिचय मिला। भावी पार्षद उम्मीदवारों का परिचय व विजयी सरपंचों की जानकारी का सचित्र प्रकाशन अच्छा लगा। पत्रिका के पृष्ठ 13 पर शीर्षक '**समाज के कार्यकर्ताओं को मिले उचित स्थान**' के सम्बन्ध में वरिष्ठ समाजसेवी श्री हेमचन्द खड़गटा के विचार पढ़ने को मिले, जिसमें उनकी पीड़ा भी ज्ञात हुई। श्री खड़गटा लम्बे समय से समाजसेवा में हैं व अपनी स्पष्टवादिता के लिए जाने जाते हैं। उनका यह कथन सर्वथा स्वागतयोग्य है कि सामाजिक कार्यकर्ताओं को समाज में उचित स्थान मिले। इससे कार्यकर्ता उत्साहित होंगे व उनका मनोबल बढ़ेगा, जो अन्ततः समाज के लिए कारगर सिद्ध होगा। पर ऐसा केवल तब सम्भव है कि वरिष्ठ कार्यकर्ता जो सामाजिक संस्थाओं में पहले से हैं अपना स्थान एक उम्र के बाद स्वयं रिक्त करना प्रारम्भ करें तथा बिना पद के कार्य करते रहें। जाहिर सी बात है जब तक संस्थाओं में पद रिक्त नहीं होगा युवा सामाजिक कार्यकर्ता को उचित स्थान कैसे मिल पायेगा? और कैसे युवा समाजसेवी की प्रतिभा ज्ञात हो पायेगी?

यह वरिष्ठ समाज सेवी की जिम्मेदारी है वह नई पीढ़ी को समाज सेवा में लाये व धीरे-धीरे उसे प्रशिक्षित करें ताकि जिम्मेदारी मिलने पर वह नवीनतता के साथ कार्य का निर्वहन करके अच्छा उदाहरण पेश कर पायें। ऐसे युवा सामाजिक कार्यकर्ता अपने वरिष्ठ कार्यकर्ताओं व समाजसेवियों को अपने अर्न्तमन से सम्मान देंगे तथा समय-समय पर उनसे मार्गदर्शन लेंगे। **पर वरिष्ठ लोगों को सामाजिक संस्थाओं से अपना अंगद का पाँव तो हटाना ही होगा, तब ही युवा सामाजिक कार्यकर्ताओं को उचित स्थान व सम्मान मिल पायेगा।**

- सी.पी. अजमेरा

कर लो दुनिया मुट्ठी में-क्या सही है ?

आजकल स्पर्धा के युग में युवा सब कुछ तत्काल पा लेने के प्रति आकर्षित हैं, उसका सब्र घटता जा रहा है। वह चाहता है **''कर लो दुनिया मुट्ठी में''**। आज की दुनिया जिस डगर पर चल पड़ी है, क्या यह नई राह है ? सोशियल मीडिया व ऑनलाईन खरीद हमारी व्यवस्थाओं को आगे बढ़ा रहे हैं या नष्ट कर रहे हैं, यह प्रश्न मस्तिष्क पटल को झकझौर रहा है। कहीं हम इसके माध्यम से वर्तमान रिश्तों की व्यवस्था को खत्म तो नहीं कर देंगे वहीं ऑन लाईन खरीद से मौहल्ले व स्थानीय व्यापार के ह्रास में भागीदार तो नहीं हो रहे। छोटे-छोटे दुकानदार, फेरीवाले, फुटपाथ पर बैठकर सामान बेचने वाले कम पढ़े लिखे लोग इससे अनायास प्रभावित तो नहीं हो रहे ?

टेक्नोलॉजी के दौर में व्यक्ति टीवी व होम एप्लाइन्सेज से घरों में जहाँ घिरा हुआ है तथा इनके माध्यम से सूचना व मनोरंजन करने के अलावा सब कुछ जल्द कर लेना चाहता है। पर उसने इनकी कितनी कीमत चुकाई इस ओर कोई ध्यान नहीं देता। क्या इनके बिना जीवन जीना सम्भव न था ? एक पहलू यह भी है जिस पर ध्यान दें-

यदि न्यूनतम जरूरी चीजों के साथ जीवन जीया जाये तो इंसान अपने जीवन को सादा जीवन बना पायेगा, इससे सांसारिक नियम व विधान की उलझने स्वत: सुलझने लगेगी। तब उसे न एकांत लगेगा न गरीबी महसूस होगी न दूसरों की कड़वी बातें बुरी लगेगी। न्यूनतम आवश्यकता के अभ्यस्त होने पर अनेक व्यसनों का स्वत: त्याग हो जायेगा। जहां पहले कुछ लोगों को नॉनवेज व महंगी विदेशी शराब जीवन में अच्छी लगती थी अब सूखी रोटी भी स्वादिष्ट लगेगी तथा मटके का शुद्ध जल अमृत समान लगने लगेगा। महंगे बिस्तर के बजाए चटाई पर सोना ज्यादा सुकुन देगा।

लेखक का आशय यह कदापि नहीं है कि युवा, संन्यास की ओर आकर्षित हों। बल्की भौतिकवादी आधुनिक दृष्टिकोण को सब कुछ नहीं समझें अपितु सोशल मीडिया के आभामण्डल की चमक-धमक से बाहर निकल कर धरातल से जुड़े रहें। वे सब्र से काम ले व एक दिन में ही सब कुछ पा लेने के सपने नहीं संजोये। सोशल मीडिया की कीमत पर रिश्तों को नुकसान न पहुंचे इसका ध्यान रखें, क्योंकि अपने तो अपने होते हैं। उधर इन्टरनेट/ऑनलाईन से खरीददारी के बजाए आसपास के छोटे-छोटे दुकानदारों से खरीद करके उनके जीवन निर्वाह का माध्यम बने, इनकी दुआएँ आपको स्वस्थ, प्रसन्न व विकासोन्मुखी बनाने में कहीं न कहीं काम अवश्य आयेगी। युवाओं की अधिक आय होने के कारण वे अनावश्यक भौतिक वस्तुओं का संग्रहण नहीं करें। इनकी खरीद के लिए ऋण (Loan) तो बिल्कुल न लें। सबसे जरूरी है उतना ही काम करें जिससे स्वास्थ्य प्रभावित न हो।

ये सिर्फ देते हैं

जी हां दोस्तों, आज के तनाव भरे वातावरण में, भागदौड़ की जिंदगी में इन तीन चीज़ों से अपना संपर्क बनाए रखिए और देखिए कि जिन्दगी में कितना बदलाव आ गया है। सबसे पहले तो मैं, बात कर रही हूं अपने आस पास के पर्यावरण की अर्थात हरियाली की और इसका सीधा संबंध पेड़ पोधों से है । पेड़ पोधे जीव-जंतु के बाद सबसे जीवंत और जान देने वाली वस्तु है। यदि आप इनसे स्वयं को जोड़ते हैं तो कोई फर्क नहीं पड़ता कि किसी ने आप का दिल दुखाया है,आपका दु:ख और अवसाद ये बखूबी हर लेंगे बशर्ते आप इनसे जुड़िये। वैसे भी पेड़ पोधे तो जीवनदायिनी औषधि है। यदि घर में पेड़ पोधे फूल देने वाले हैं तो कई सुंदर पक्षी कीट पतंगे वैसे ही आप को खुश हाल कर देंगे। प्रात: उठ कर इनका दर्शन कभी आप को बीमार नहीं पड़ने देगा। तो ये तो रही बात पेड़ पौधे जनित पर्यावरण की, अब बात करते है जानवरों की, यकीन मानिए कि जिस घर में पालतू जानवर है वहां अवसाद देखने को नहीं मिलता। जानवर आपकी जिन्दगी का एक अभिन्न हिस्सा बन जाते हैं और वे भी आपको अपनी आदत में शुमार कर लेते हैं, जानवर नि:शब्द होते हुए भी हमारी भावनाओं को आसानी से समझ लेते हैं और यक़ीनन हमारा दु:ख उनका अपना दु:ख बंट जाता है, कभी कभी तो यह भी सुना जाता है कि पेड़-पौधे और जानवर हमारी पीड़ा को अपने ऊपर ले लेते हैं।

अब मैं, बात करना चाहूंगी बच्चों के बारे में जिनके लिए कहा गया है कि बच्चे मन के सच्चे।

निसंदेह ये हमारे जीवन का सबसे अच्छा टाईम पास होते हैं। घर में बच्चों की किलकारियां रौनक ला देती है,ठीक वैसे ही आप अपने आसपास बच्चों से दोस्ती कीजिए उन्हें प्यार दीजिए और थोड़ी देर उनसे बात कीजिए वे आप को खुशहाल कर देंगे ओर कुछ नहीं तो आप जरूरतमंद बच्चों से मिलिए वे भी आपको प्यार से सरोबार कर देंगे।

सच पूछिए तो ये सब बहुत छोटे छोटे से प्रयास है जिन्हे अमल में लाकर आप बड़ी खुशी पा सकते हैं।

पेड़-पौधे, जानवर व बच्चे दुनिया की ऐसी हस्ती है, जो मांगती नहीं बस लुटाती है। यदि आप अपने जीवन में जीवंतता डालना चाहते हैं तो अपनी व्यस्तताओं के बावजूद इन तीनों का सानिध्य प्राप्त करें और बिना शर्त प्यार पाए, यही नहीं बल्की अपने घर परिवार का वास्तु सुधारें।

- भारती तोंदवाल

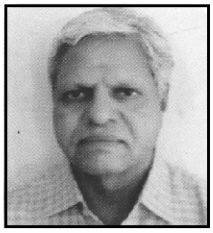

कुमावत समाज के पिछड़ेपन का कारण

मैंने वर्ष 1976 में हस्तकला के व्यवसाय में कदम रखा तथा इस व्यवसाय की एबीसीडी सीखना प्रारंभ किया। इससे पूर्व मेरे परिवार तथा निकट सम्बन्धियों में कोई भी व्यवसाय नहीं करता था। मैं प्रयास करता गया तो जहां-जहां कलाकृतियां बनाई जाती थी वहां पहुंच कर मैने लोगों से संपर्क किया। ज्ञात हुआ कि शहर की चार दीवारी क्षेत्र के अतिरिक्त सोडाला, लालपुरा कॉलोनी, टोंक फाटक, बापू नगर, लाखाजी की ढाणी, झोटवाड़ा, नींदड, चौमूं व गोविंदगढ़ में हमारे समाज के हस्तकला के कारीगरों का बाहुल्य है। उस दौर में मैंने समाज के लोगो को मिलनसार ईमानदार तथा सरल स्वभाव का पाया। यद्दपि ये लोग अधिक पढ़े-लिखे नहीं थे किंतु आपसी संपर्क व सहयोग रखना जानते थे। इनके बहुत से परिवारजन व रिश्तेदार भवन निर्माण की कारीगरी का कार्य करते थे तथा उनकी दक्षता के कारण दूर-दूर से इन लोगों की मांग आती रहती थी। समाज के कुछ लोग ऑटो मोबाइल, बिजली आदि मैकेनिक के कार्य में भी संलग्न थे। इस दौरान मैंने पाया कि हमारे समाज के लोग अन्य समाज के लोगों पर आश्रित थे व उनके शोषण के शिकार थे। कारण था समाज में शिक्षा का अभाव, परिणामस्वरूप सरकारी नौकरियों में हम लोगों की संख्या अत्यंत कम थी, व्यापार व उद्योग धंधों में समाज के लोग ना के बराबर थे, समाज के लोग जयपुर के बाहर व्यापार इत्यादि कार्यों के लिए जाने में झिझकते थे। उस समय हमारे समाज के लोगों की जीवन शैली कमोबेश साधारण व एक जैसी थी। लोग राजनीति से दूर रहते थे।

वर्ष 1992- 93 में, मैं श्री मालीराम जी चार्टर्ड अकाउंटेंट के संपर्क में आया तथा उनके साथ जयपुर के बाहर जाने का अवसर मिला तो पाया कि जयपुर के बाहर का समाज भी कमोबेश एक जैसा ही है। हमारे समाज के कुछ लोग राजस्थान के बाहर मुंबई, इंदौर, छत्तीसगढ़, हैदराबाद तथा उत्तरी पूर्वी राज्यो में व्यवसाय के लिए चले गए थे। उन लोगों ने कड़ी मेहनत की तथा वहां अपने आप को स्थापित किया। उन्होंने अपने रिश्तेदारों एवं सगे संबंधियों को भी बुलाया तथा शीघ्र ही उन्हें भी वहां व्यवसाय में स्थापित करने में मदद की।

फिर दौर आया शिक्षा का। समाज के बहुत से युवा शिक्षित होकर सरकारी नौकरियों, छोटे- मोटे व्यवसाय तथा उद्योग- धंधों में आये तथा स्वयं को स्थापित किया। भवन निर्माण के क्षेत्र में भी कारीगर से हमारे समाज के लोग ठेकेदार तथा बिल्डर के रूप में आये। ये सब ईमानदारी से कार्य कर रहे थे, इससे वे स्थापित तो हुए किंतु अधिक जोखिम उठाने की क्षमता नहीं होने तथा दूरदर्शिता के अभाव के कारण से अधिक प्रगति नहीं कर पाए। परिणामत: इस व्यवसाय को शीघ्र ही अन्य समाज के लोगों द्वारा हड़प लिया गया। किंतु हमारे जो लोग यह कार्य करते रहे उन्होंने अपनी आर्थिक स्थिति को बहुत कुछ अच्छा कर लिया।

समाज में 2-3 लोगों ने **राजनीति में अपने पांव जमाने** की कोशिश की तथा वे चुनाव जीते भी इससे राजनीतिक जागरूकता समाज में आने लगी किंतु यह बहुत थोड़ा प्रयास था। इन नेताओं ने नई पीढ़ी को तैयार नही किया न स्वयं अधिक टिक पाए।

फिर एक दौर आया **समाज में चेतना जाग्रत करने का।** इसके परिणाम स्वरूप अनेक विकास समितियां, जिला समितियां, महासभा, विवाह समितियां, इत्यादि का प्रादुर्भाव हुआ। प्रतिवर्ष सामूहिक विवाह आयोजित होने लगे तथा न्यूनतम खर्च में लोग बच्चों की शादियां करने लगे इससे यद्यपि विवाह पर होने वाले खर्च में राहत मिली किंतु सामाजिक उत्थान का मकसद पूर्ण नहीं हुआ। विवाह समितियां कुछ हद तक इसलिए सफल रही कि उसमें कम राशि में विवाह होने लगे तथा समाज के लोग वर-वधू को कन्यादान के रूप में गिफ्ट तथा राशि देना अपना धर्म समझते है। अन्य समितियों द्वारा डांडिया, डांस, मेहंदी प्रतियोगिता, सांस्कृतिक प्रतियोगिता, बच्चों व महिलाओं के गेम्स, प्रतिभा सम्मान समारोह इत्यादि का आयोजन किया जाता रहा, जो साल दर साल होते आ रहे हैं।

यह भी देखा गया कि जब चुनाव का दौर आता है तो अनेक संस्थाओं की बाढ़ आ जाती है तथा अपने अपने तरीके से अपने कार्यक्रम संचालित करती है। जिसे यूं कहा जाए कि ''अपनी अपनी डफली अपना अपना राग'', इसके अतिरिक्त ये कुछ करने के लिए सक्षम नहीं रहती है। इनके संचालक यह कहते नहीं थकते कि उनके प्रयास से हमारा समाज प्रगति कर रहा है पर वास्तव में यह संस्थाएं व उनके संचालक उद्देश्य विहीन होकर कार्य कर रहे हैं तथा सामाजिक एकता व अखंडता पर उनका कोई ध्यान ही नहीं रहता, इससे समाज को वास्तव में कोई लाभ नहीं होता है।

जब से मैंने समाज को भली-भांति देखा तो पाया कि समाज के लोग आपस में एक दूसरे को नीचा दिखाने की होड़ में लगे हैं, उन्हें यह पता ही नहीं कि वे आपस में एक दूसरे का ही नुकसान पहुँचा रहे हैं। समाज में जो व्यक्ति अमीर हुए वे अन्य समाज बंधु को बढ़ता हुआ नहीं देखना चाहता। क्योंकि वे अपनी लकीर को दूसरे से छोटा होते देख नहीं सकते। इस लिए टांग खीचकर गिराने को आमादा रहते है। जबकि अपनी लकीर के साथ यदि दूसरे लकीर खींची जाती है तो समाज एक और एक 2 नही अपितु एक और एक 11 होता। ऐसे सम्पन्न हुए लोग थोड़े को ही बहूत अर्जित मान करके भ्रम में जी रहे है, उन्हें यह पता ही नही कि उनसे तो बहुत लोग आर्थिक रूप से सम्पन्न है। अत: उन्हें अपनी सम्पति का गुणगान करना व दूसरों को जताने से बचना चाहिए। ये लोग जागरूकता, समझदारी, विवेक, चिंतन आदि के अभाव के कारण गलती कर रहे हैं तथा समाज में ग्रुपबाजी चरम सीमा पर है। जहां दूसरे समाज के लोग आपस में सहयोग व सौहार्द का वातावरण लाने का प्रयास कर रहे हैं वही हम बिखराव का कार्य करके स्वयं अपने को ही जाने अनजाने में कमजोर करना करने की गलती कर रहे हैं। यह हमें हाल ही में हुए नगर निगम चुनावों में देखने को खूब मिला।

नगर निगम चुनावों में समाज के उम्मीदवारों को जयपुर में दोनों प्रमुख राजनीतिक पार्टियों ने 12-13 टिकिट दिए। ये अच्छा अवसर था समाज का परचम लहराने का, पर इनमे से केवल 3 प्रत्याशी ही जीत पाए। इस चुनावी दौर में मैं स्वयं 7-8 प्रत्याशियों से मिला। सोचा कि

जहां हमारा समाज बहुतायत में है वहां से तो ये जीत ही सकते है। पर ऐसा नही हो सका। **दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि झोटवाड़ा, लालकोठी स्कीम, सांगानेर से भी हमारे प्रत्याशी पराजित हो गए जहाँ हमारे समाज का बाहुल्य था व समाज के कई चर्चित वरिष्ठ तथा प्रतिष्ठित समाज सेवी व नेता इस क्षेत्रों में निवास कर रहे है।** शायद अपनी राजनीतिक निष्ठाओं के कारण वे सामाजिक उत्तरदायित्व को तरजीह नही दे पाए या इन प्रत्याशियों को आत्मसात नही कर पाए। वे जाट, गुर्जर, ब्राह्मण व वणिक जातियों से कुछ भी सीख पाने में विफल रहे, जो समाज के वर्चस्व के लिए व्यक्तिगत भेदभाव मिटा देते है अपनी जाति के उम्मीदवार को जिताने में रात-दिन एक कर देते है। हमारे प्रत्याशी टीम वर्क, चुनावी मैनेजमेंट, प्रतिद्वन्दी की रणनीति की जानकारी जुटाने, अन्य समाज का विश्वास जीतने, धनराशि खर्च करने व अनुभव आदि के अभाव से ग्रस्त रहे। हमारे प्रत्याशी हमारी सामाजिक संस्थाओं व बुद्धिजीवियों से तालमेल बैठाते, चर्चा करते व समाज भी प्रतिष्ठा का प्रश्न मान कर एकता व संगठन के साथ चुनाव में सहयोग देते व फण्ड की व्यवस्था करते तो परिणाम ओर अच्छे आ सकते थे। भविष्य में ये सीटे समाज को ही मिलती, मजबूत प्लेटफॉर्म तैयार होता, आगे के रास्ते खुलते, समाज के लोगों का काम आसानी से होता, समाज में आत्मविश्वास जाग्रत होता व भावी पीढ़ी को प्रेरणा मिलती। पर दूरदर्शिता के अभाव, ईर्ष्या व संकीर्ण मानसिकता के कारण समाज ने खुद के पाँव पर कुल्हाड़ी मार ली। भविष्य में कोई पार्टी आखिर हमारे समाज के प्रत्याशी को यहाँ से टिकिट क्यों देंगी? दूसरी ओर देखे तो **मुस्लिम समाज ने एकजुट रह कर अपने 30 प्रत्याशी जीता लिए तथा डिप्टी मेयर का पद भी हथिया लिया। उधर गुर्जर समाज ने शक्ति बल दिखा कर सरकार से अपने अनुकूल समझौता कर लिया साथ ही मेयर पद हासिल कर लिया।** समाज पहले इन्हे देखे, और फिर देखे अपनी ओर, कि हम कहाँ खड़े है? जो मिल सकता था वह भी गवां दिया। अब भला क्या हो सकता है 'जब चिड़िया चुग गई खेत!'

मेरा तो यही निवेदन है कि जो समाजजन राजनीति में अपना भविष्य तलाशना चाहते है वे अभी से जनसेवक बन कर सर्वसमाज के सुख दुःख में साथ लगे तथा क्षेत्र के लोगों के छोटे मोटे कार्य निरंतर कराते हुए अपनी सेवाएं देते रहे। ताकि जब 5 वर्ष बाद चुनाव हो तो राजनीतिक पार्टियों के पास आपके अलावा ओर किसी को टिकिट देने का विकल्प ही नही रहे। आपका व समाज का वर्चस्व तभी कायम हो पायेगा।

यह मेरे व्यक्तिगत विचार है यदि किसी को बुरा लगे तो क्षमा चाहता हूँ।

– **सी एम कुमावत,** हेण्डीक्राफ्ट व्यवसायी

कुंडली मिलान व समाज की वेदना

जब से कंप्यूटर का चलन आया है तब से कुंडली मिलान की प्रथा हमारे समाज में बहुत ज्यादा बढ़ गई। इससे पहले हमारे पूर्वज कुंडली का मिलान न के बराबर करते थे ।

आज आप के पूर्वज या माँ बाप जिनको आप अपने जीवन में उच्चतम स्थान देते होंगे । एक बार उनकी कुंडली मिलान करके देखिएगा, दावे के साथ कहा जा सकता है कि 80-90% कि कुंडली नही मिलेगी, जब कि सबसे सफलतम परिवार वही है।

आज आप जाना पहचाना परिवार,शक्ल-सूरत, पढाई, आर्थिक स्थिति, शहर व उम्र सब मिलाने के बाद कुंडली में आकर अटक जाते हो । इस कुंडली मिलान के चक्कर आप सब एक अच्छे जीवन साथी, जाने पहचाने अच्छे रिश्ते से चूक रहे है। कहते है कि भगवान राम व सीता जी की कुंडली सबसे अच्छी मिली थी फिर क्या हुआ, 14 वर्ष वनवास और फिर पत्नी सीता का परित्याग।

आज समाज इतना पढा लिखा हो गया है कम से कम इस वैज्ञानिक युग में हमें इन अंधविश्वासों से दूर रह करके एक अच्छे जीवन साथी की तलाश करनी चाहिए न कि एक अच्छी कुंडली की।

मुक्ति-क्लब : अगर आप मेरी बातों से सहमत है तो अपने बॉयोडाटा में लिखे *हम कुंडली नही मिलाते* । आप सब पढ़े लिखे लोग है, इसे एक अभियान बना दे। हमारे समाज की आधे से ज्यादा शादी ब्याह सम्बन्धों की समस्या तो युं ही हल हो जाएगी जो कुंडली के चक्कर में अटकी पड़ी है।

कुंडली का सच : एक बार हिंदुस्तान का सबसे बड़ा ज्योतिष सम्मेलन हुआ । वँहा पर एक व्यक्ति 10 कुण्डलियां लेकर गया और उसने ज्योतिषियों के सामने कुछ प्रश्न रखे कि इन 10 कुंडलियो में से कौन सी कुंडली लड़के की है और कौन सी लड़की की, व्यक्ति के जन्म का समय और स्थान क्या है, कौन किस जाति का है, कौन जीवित अथवा मृत है एवम कौन शादी शुदा है और कौन कुँवारा है? उस महासम्मेलन में किसी भी ज्योतिषी के पास इन सवालों का जवाब नही था ।

मित्रों, जिस कुंडली को देखकर आप आज यानी वर्तमान नही बता सकते है, उन कुंडलियों के आधार पर भविष्य को देखना एक मूर्खता के अलावा कुछ भी नही है ।

समाज में कुँवारे युवक युवतियों की संख्या व शादी की उम्र बढ़ती ही जा रही है और आपकी तलाश खत्म नहीं हो पा रही। साथियों कुंडली मिलान के चक्कर में आप अपने बच्चों का भविष्य अन्धकार में नहीं ढकेले। यदि लंबा समय व्यतीत होगा तो शायद लड़के/लड़की स्वयं ही अन्य समाज में रिश्ते कर लेंगे व इससे आपके अरमान तो खत्म ही होंगे साथ ही असहज होने एवं समाज में शर्मिंदा होने के सिवाय कुछ न बचेगा।

इसलिए इस आधुनिक युग में दकियानूसी सोच व ब्राह्मणवाद के चक्कर में न पड़ें व लड़के-लड़की की योग्यता, लम्बाई, उम्र का सही मैच, व्यवहार, पारिवारिक पृष्ठभूमि व रहन-सहन जैसे पारम्परिक पद्धति के अनुसार रिश्ते करने में ही सार है।

कुमावत इंडिया पत्रिका परिवार-एक प्रयास

सभी को दीपावली व नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं। ईश्वर से सभी के जीवन में अच्छे स्वास्थ्य, धन-वैभव , सौहार्द बनाये रखने की हम सदैव प्रार्थना करते है।

'दीवाली' एक ऐसा शब्द है जो इस पर्व को मनाने वालो के लिए ही नही बल्कि अन्य सभी धर्म, वर्ग, राज्य, देश-विदेश में भी व्यापारिक, आर्थिक, सौहार्दिक व अपनत्व की भावना को लेकर आता है। इस पर्व को हर कोई व्यक्ति अपने-अपने रस्मों-रिवाजो से मनाता है, कुल मिला के यू कहे कि पूरे विश्व में हर वर्ष 'दीवाली' एक अवसर की तरह आती है।

इस त्यौहार का अपना अलग ही स्थान और महत्व है। तो इस दीवाली पर आप सभी कुमावत इंडिया पत्रिका परिवार के सदस्यों, संस्था के संचालकों, संयोजकों और आम-खास सदस्यों को हमारी तरफ से हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका के सम्पादक मंडल के सभी लोगो का यह एक साहसिक प्रयास है इसमें कोई भी शंका नहीं है। पत्रिका ने पिछले 3 वर्षों में अपने आप को बेहतर करते रहने के नियम का सहर्ष पालन किया है और उसी का परिणाम है कि आप सभी को इस सामाजिक कार्य का प्रतिसाद भी मिल रहा है।

क्योंकि सामाजिक पत्रिका उस समाज की विचारधारा, व्यवहार, रीति-रिवाज, शिक्षा-संस्कार और नियमों का दर्पण होती है। पत्रिका का निष्पक्ष और सहज संचालन इसे समाज के आमजन की अभिव्यक्ति के स्तम्भ स्वरूप स्थापित करती है। अत: इन सभी प्रयासों के लिए और हम जैसे 'ब्लंट-आलोचकों' के लेखों को स्थान देने के साहस के लिए भी आप सभी का अभिनंदन!

खेर, यह वर्ष कई प्रकार की चाही-अनचाही ऐतिहासिक घटनाओं का साक्षी रहा है जिसमे 100 वर्ष पूर्व स्पेन की महामारी के बाद 'कोरोना' जैसी महामारी का 2020 में आना शायद कई दशकों तक इसकी छाप छोड़ेगा, इस महामारी को मानव निर्मित शक्तियों में जैविक हथियार का सबसे अचूक शस्त्र के रूप में आने वाले वर्षो तक हर कोई अपने-अपने हिसाब व गणित से इतिहास के पन्नों में इसकी व्याख्या करेगा। इस महामारी के चलते 5 लाख से भी ऊपर मानवीय जीवन को क्षति सम्पूर्ण विश्व में हुई है और यह संख्या निरंतर बढ़ती ही जा रही है ।

पश्चिमी देशों में इसकी दूसरी लहर अभी भी एक चिंता का विषय बनी हुई है और इस वैश्विक महामारी के समय में वैश्विक राजनीति में बाइडेन का अमेरिका के नए राष्ट्रपति के रूप में उदय होना जितना महत्वपूर्ण है, उससे कहीं ज्यादा हमारे लिए कमला हैरिस, का उप-राष्ट्रपति बनना एक सुखद अनुभव है जो भारतीय मूल की महिला है। आपको अमेरिका के इतिहास में प्रथम महिला उप-राष्ट्रपति बनाने का अवसर मिला है। परन्तु भारत के लिए इसके राजनीतिक, सामरिक, आर्थिक व सामाजिक प्रभाव का असर जानने में अभी समय है।

खैर, राजनीति के अनुसार हमारे कुमावत समाज के लिए भी यह दीवाली अच्छी रही यह कह सकते है, पंचायतों और जयपुर नगर निगम में जितने भी लोगो ने प्रयास किया और 3 लोगों को सफलता मिली (यद्यपि यह कम है)। यह भविष्य के गर्भ में समाज की स्थिति को छिपे रहने जैसा है।

वर्तमान युवा पीढ़ी, वरिष्ठ और भावी पीढ़ी इन परिणामों को कैसे देखती है यह तो इस विषय पर पारदर्शी, ब्लंट, और तथ्यात्मक विश्लेषण पर ही निर्भर करता है। अब सवाल ये उठता है कि सटीक और विश्वसनीय आकड़ो और व्यवहार को कैसे और कौन सामने लाये... ? खैर, हम आज इस विषय को आप सभी सामाजिक बुद्धिजीवी और सफल वर्ग या युवाओं पर छोड़ देते है।

जैसे-जैसे कोरोना देशभर में कम होना शुरू हुआ है आर्थिक,सामाजिक गतिविधियों ने भी करवट लेनी शुरू की है, हालांकि शिक्षा के क्षेत्र में स्कूलों के न खुलने व आवागमन के साधनों में पाबंदी अभी भी इसकी रफ्तार को रोक रही है।

फिर भी दीपावली के पर्व ने बाजारों और घरों में रौनक लौटाने में संजीवनी का कार्य किया है।

बिहार के नतीजों की गरमाहट, मध्यप्रदेश व अन्य जगहों के उपचुनावों के नतीजे, और बंगाल में दीदी-मोदी के बीच की रणभेरी का आगाज अब शायद सत्तापक्ष को अपनी ही नीतियों और प्रयोगों की सुध लेने में सहायक बने और विपक्ष को थोड़ा सांस लेने व खड़ा होने के संतुलन को बनाये रखने में सक्षम साबित हो।

आर्थिक दृष्टि और अर्थव्यवस्था की बात करे तो शेयर बाजार ने तो अपने आपको अब तक के सर्वोच्च स्तरों पर पहुँच कर दीवाली के आनन्द को दोगुना कर दिया है, हाँ, यह अलग बात है कि जमीनी स्तरों पर अभी दिल्ली दूर है।

कोरोना की महामारी ने 70 फीसदी कॉरपोरेट घरानों की दीवाली पहले ही कर दी है, क्योंकि जब से वर्क फ्रॉम होम शुरू हुआ है और सरकार की नीतियों में इसको समर्थन मिला है इन सभी कम्पनियो को उनके कर्मचारी 24 घंटे उपलब्ध हो गये है, इसलिए कई जानी-मानी कम्पनियों ने 2021 तक घर से ही काम करने की मंजूरी ले ली है।

इससे उनके खर्चो में भारी कमी और कर्मचारी का समय और गुणवत्ता दोनों का ही दोहन चारों हाथ-पैरों से हो रहा है, और डरा हुआ कर्मचारी बंधुआ मजदूर की तरह हर वो कार्य करने को तैयार है जो उसे अपनी नोकरी में बने रहने में मदद कर सकें।

कोरोनो ने बहुराष्ट्रीय खाद्य कम्पनियो की भी दीवाली पहले ही करदी है क्योंकि इससे पहले तो नकली मिठाईयों की न्यूज को फैलाने के लिए भांड मीडिया पर खर्च करना पड़ता था पर अब तो स्वदेशी ग्राहक स्वंय से ही मिठाई नही खरीद रहा है, वो भी चॉकलेट के कुछ मीठा हो जाये के विज्ञापन में खो गया है। आम व्यापारियों, हलवाइयों, पटाखों, दियों, रँगाई-पुताई वालो, कपड़े व उपहार वाले सभी का दिवाला निकल चुका है और आप -हम विदेशी कम्पनियों से ऑनलाइन डिस्काउंट शॉपिंग कर के उन्हें मालामाल कर रहे हैं।

खैर, फिर भी दीवाली हर एक व्यक्ति विशेष के लिए खास कर भारतवर्ष के लोगों में अपना एक अलग महत्व रखती है, इसे हम भगवान राम के, अन्याय पर न्याय की विजय के बाद अयोध्या आगमन का पर्व के रूप में मनाते है जहाँ राम राज्य में माँ लक्ष्मी, सरस्वती व विघ्नहर्ता गणेश का समावेश रहता है और हर भारतीय इसे आनन्द व नई आशाओं के रूप में सपरिवार मानता है।

दीवाली के इस विशेष संस्करण में 'कुमावत इंडिया' पत्रिका को एक बार फिर हम ह्रदय की गहराइयों से धन्यवाद देते है जो सामाजिक जागृति व एकीकरण के लिए पत्रिका के माध्यम से समाज के हर क्षेत्र व वर्ग के विचारों से अवगत करवा रहे है।

श्रीमान रमेश जी व उनकी टीम के साहस का भी धन्यवाद है जो हम जैसे कड़वेपन की लेखनी को पत्रिका में स्थान देते है।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की वेबसाइट और पीडीएफ फॉर्मेट में इस महामारी के चलते भी निर्विघ्न प्रकाशन और प्रसार वास्तव मे सराहनीय है, समाज के होनहार छात्रों, सम्मानीय मातृ शक्ति , बुद्धिजीवी वर्ग, सफल समाजिक प्रबुद्धजनों के लेख व अनुभव पत्रिका में निरंतर छपना एक दूरगामी सोच व परिपक्वता की निशानी है।

समाज के आगे जाकर जानेमाने कवि और लेखकों के विचारों को पत्रिका में जगह देना एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का भी संचयन करती है जिससे सीखकर लेखक और पाठक अपनी लेखनी और अनुभव को और भी धार-धार कर सकते है।

पत्रिका बहुत अच्छा कार्य कर रही है इसमें जरा भी संदेह नही है अगर आने वाले समय में समाज के सभी तरह के सफल व्यक्तियों के जैसे राजनेता, सामाजिक नेता, सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारी, कवि-लेखक, व्यापारी, अभियंता , लेखाकार , राजकीय-केन्द्रीय कर्मचारी, कानूनविद व प्रशासनिक अधिकारी, स्वास्थ्य अधिकारी व अन्य सभी क्षेत्र के लोगो का 'समाज के प्रति आत्मसहयोग' के नाम से 2 पृष्ठो का समावेश हो सके तो पत्रिका के लिए यह एक क्रांतिकारी कदम बन सकता है, हर संस्करण में 2-3 सफल व्यक्तियों के समाज के प्रति अनुभव, सहयोग, रोष, और विचारों का लाभ हर व्यक्ति को मिल सकेगा, यह हमारा व्यक्तिगत सुझाव है क्योंकि कालांतर से ऐसा देखा गया है कि एक सफल व्यक्ति अपनी सफलता के साथ ही समाज से आंतरिक रूप से पृथक हो जाता है, शारीरिक रूप से उपलब्ध होता है पर अपने अनुभवों के लाभ से नदारद होता है, कई ऐसे योग्य व उन्नतिशील, प्रगतिशील और विलक्षण प्रतिभा के धनी सामाजिक व्यक्ति कुछ समाजिक ठेकेदारों के चलते मुख्य धारा से अलग हो जाते है।

ऐसे कई अनुभव हम-सब ने अपने जीवन में आत्मसात किये होंगे। अत: यह 2 पृष्ठ उन सभी लोगो के समाज के प्रति उनकी कुछ करने की चाह को प्रकट करने में एक मिल का पत्थर बन सकते है जिससे वर्तमान और भावी पीढ़ी का विकास और वैचारिक संचार आसान हो सकता है। इन 2 पृष्ठों में हर एक विषय पर समाज के विशेषज्ञ लोगो की बेबाक राय का लाभ सभी को मिल सकता है , वैसे यह हमारा व्यक्तिगत सुझाव है।

खैर, वैसे तो दीवाली बारह महीने का पर्व है जो खुशियों और उम्मीद का प्रतीक है इसलिए हमने इस बार किसी भी सामाजिक विषय पर नही लिखा क्योंकि विषय इतने है कि लेखनी अविलंब लिखती रहे, परन्तु हर्षोल्लास के समय हर्ष और सौहार्द को ही प्रमुखता देनी चाहिये। आप सभी को एक बार फिर दीवाली की हार्दिक शुभकामनाएं।

स्वस्थ रहे-खुश रहे। जय हिंद

आपका हार्दिक आभार।

-मुकेश कुमावत (निमिवाल)

उप-सरपंच दम्पत्ति

ग्राम पीपलिया कलां, तहसील रायपुर, जिला-पाली, राजस्थान में समाज के दम्पत्ति चर्चा में हैं वजह है कि पति-पत्नी ने अलग-अलग एससी बाहुल्य वार्ड से वार्ड पंच का चुनाव लड़ा व दोनों ने जीत हासिल की। श्री गजेन्द्र कुमावत ग्राम में जनसमस्याओं के निराकरण के लिए सदैव प्रयासरत रहते हैं इसलिए आपको उपसरपंच पद हेतु निर्वाचित हुए।

श्रीमती दर्शिता कुमावत आप राजनीति में हमेशा अग्रिम पंक्ति पर कार्य करती रही हैं। इसलिए आपको भाजपा मंडल रायपुर की कार्यकारिणी में संगठन मंत्री पद पर मनोनीत किया है। 'कुमावत इंडिया' पत्रिका परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

श्री मुकेश नीमीवाल जी के सुझाव का यह पत्रिका स्वागत करती है तथा राजकीय अधिकारी, प्रोफेशनल्स, राजनेताओं, उद्योग व व्यापार जगत के लोगों से अनुरोध है कि वे अपने अनुभव व विचार पत्रिका को प्रकाशनार्थ भिजवायें। उन्हें पत्रिका द्वारा प्रकाशित किया जायेगा।

- सम्पादक

अयोध्या में अलोकिक दीवाली

अयोध्या में राम मंदिर की नींव पूजन के बाद पहली बार 3 दिवसीय दिवाली मनाई गई, इस बार सरयू घाट पर 5 लाख 51 हजार दीप जलाये जाने थे, किन्तु 5 लाख 84 हजार दीप जलाकर गिनीज बुक में रेकार्ड बना। लेजर शो भी आनन्दित करने वाला था। इस अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ, महामहीम राज्यपाल आनन्दी बेन व अयोध्यावासी उपस्थित थे। पूरी अयोध्या में राम के भजन व राम से सम्बन्धित झांकियां प्रदर्शित थी।

बेटी के बांधी गई पगड़ी

19 अक्टूबर को 68 वर्षीय श्री ओम प्रकाश कारगवाल, निवासी ब्यावर का कोरोना के कारण देहांत हो गया था। इनके 4 बेटियाँ सीमा, ऋतु, पूनम व हर्षा है, जिनका पालन पोषण उन्होंने बेटों की तरह किया था। परिणामत: पिता की पगड़ी बेटी सीमा के सिर पर बांधी गई व ब्यावर में सामाजिक बदलाव की बयार देखने को मिली।

इससे पूर्व अंतिम संस्कार भी बेटी सीमा के हाथों करवाया गया था। रूढ़िवादी वंश परंपरा पर यह आधुनिकता की गहरी चोट है तथा महिला सशक्तिकरण की मिसाल है। बेटी व बेटा समान समझने का इससे अच्छा उदाहरण नही मिल सकता है। इस कदम का सभी समाजबंधुओं ने स्वागत किया है।

सीमा के भी 3 पुत्रियां है, उन्होंने भी बेटियों को बेटों की तरह पालन पोषण किया है, इनकी बेटी पलक दन्त चिकित्सक है। सीमा को बेटियों पर गर्व है। ब्यावर से सामाजिक बदलाव की यह अच्छी शुरुआत है। हमारे समाज को इससे प्रेरणा लेनी चाहिए तथा बेटा-बेटी को समान समझना चाहिये।

मदनगंज किशनगढ़ में इलेक्ट्रोपैथी शिविर का आयोजन

क्षत्रिय कुमावत समाज मदनगंज किशनगढ़ एवं भवानी क्लीनिक एंड रिसर्च इलेक्ट्रोपैथी के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 14.10.2020 को शिविर का आयोजन किया गया। इसमें इलेक्ट्रोपैथी दवाई स्क्रोफुलोसो1 एवं वर्मीफ्यू 1(पेड़-पौधों के अर्क से बनी) दवाई इम्यूनिटी बूस्टर के रूप में, नि:शुल्क पिलाई गई।

इलेक्ट्रोपैथी के चिकित्सक डॉ विनय सिंह जी चौहान एवं डॉ प्रवीण जी गुप्ता की टीम द्वारा कोरोना एडवाइजरी का पालन करते हुए कोरोना व मौसमी बीमारियों बचाव के लिए यह रोग प्रतिरोधक क्षमता तेज करने वाली इलेक्ट्रोपैथी ईम्युनिटी बूस्टर दवा 485 व्यक्तियों को नि:शुल्क पिलाई एवं बांटी।

मातृशक्तियों ने पंजीयन करने व सेवा देने में अहम भूमिका निभाई। अपने समाज के कैलाश जी किरोड़ीवाल आदर्श बाल निकेतन चेनपुरिया स्कूल वाले अपने स्कूल से पर्दे, टेबल, बेंच, वाईट चादर की नि:शुल्क सेवा दी।

इस कार्यक्रम में निम्न समाज बंधु उपस्थित रहे:- सर्वश्री मदनमोहन मारोठिया, श्योजीराम तुंगरिया, रामचंद्र मालिया, लालचन्द मारवाल, जगदीश बरावाल, लाल चंद टांक, हरकचंद मारोठिया, कैलाश किरोड़ीवाल, महेश मारोठिया, कमल टांक, अनिल मारोठिया, प्रहलाद जी मारवाल, अमर चंद दम्बिवाल, गणेश जी, पुलकित मारवाल, अशोक मारोठिया, प्रभुदयाल तुंगरिया व पवन बरावाल। मातृशक्तियो में गंगा देवी तुंगरिया, सोहन देवी निम्बिवाल, शिमला जी घोड़ेला परिक्षेत्र अध्यक्ष, अंजली जी घोड़ेला, सुनीता जी किरोड़ीवाल, सरस्वती जी जलान्द्रा, खुशबू तुंगरिया, कोमल जी मरेठिया ने भी सहयोग दिया।

-प्रभुदयाल तुंगरिया, व्यवस्थापक, 'कुमावत इंडिया' राष्ट्रीय पत्रिका

पत्रकार श्री मनोहर लाल कुमावत सम्मानित

कोरोना काल मे उत्कृष्ट कार्य करने के लिए वरिष्ट पत्रकार श्री मनोहर लाल कुमावत (कुमावत जागृति) उज्जैन को सम्भाग आयुक्त श्री आनंद शर्मा व सिटी प्रेस क्लब अध्यक्ष संदीप मेहता संरक्षक शैलेन्द्र कुल्मी द्वारा सम्मानित किया गया। **बधाई!**

बूंदी में रक्तदान शिविर 101 यूनिट संग्रहित

दिनांक 24 अक्टूबर 2020 शनिवार को राम नवमी के अवसर पर राजस्थान क्षत्रीय कुमावत युवा शक्ति समिति जिला बूंदी की ओर से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में समाज के लोगों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया एवं समाज के लोगों द्वारा 101 यूनिट रक्तदान किया गया इसमें युवा वर्ग एवं महिला वर्ग ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इस अवसर पर रामायण पाठ का आयोजन भी रखा गया एवं रामायण पूर्णाहुति पर समाज के लोगों द्वारा प्रसादी वितरण की गई।

इस अवसर पर जिला अध्यक्ष कन्हैया लाल कुमावत, जिला महासचिव रघुनाथ कुमावत, गिरिराज कुमावत उपाध्यक्ष बंसी लाल कुमावत, महावीर कुमावत कोषाध्यक्ष मुकेश कुमावत तथा समाज के गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

मनीष कुमावत, रामबाग गोल्फ क्लब के कार्यकारिणी सदस्य निर्वाचित

रामबाग गोल्फ क्लब 2020-22 के चुनाव में राजस्थान हाईकोर्ट के अधिवक्ता मनीष कुमावत एडवोकेट कार्यकारिणी सदस्य निर्वाचित हुए हैं। रामबाग गोल्फ क्लब में लगभग 2000 सदस्य हैं। रामबाग गोल्फ क्लब के इतिहास में कुमावत समाज से पहली बार निर्वाचित होने वाले मनीष कुमावत एडवोकेट राजस्थान फुटबॉल टीम एवं राजस्थान विश्वविद्यालय टीम के कप्तान रह चुके हैं। वर्ष 1992 में वकालत शुरू करने के पश्चात राजस्थान हाईकोर्ट लायर्स क्रिकेट टीम के कप्तान भी रहे हैं तथा हिंदुस्तान के विभिन्न शहरों में राजस्थान के वकीलों का प्रतिनिधित्व किया और गत 11 सालों से रामबाग गोल्फ क्लब में नियमित रूप से गोल्फ खेलते हैं। रामबाग गोल्फ क्लब का सबसे प्रतिष्ठित टूर्नामेंट राजमाता महारानी गायत्री देवी गोल्फ टूर्नामेंट सन् 2014 में मनीष कुमावत विजेता रहे हैं तथा अभी हाल 2020 में 'ऑल इंडिया जूरिस कप', जिसमें हिंदुस्तान के अधिवक्ता एवं माननीय सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशपतिगण एवं विभिन्न राज्यों के न्यायाधिपतिगण ने जेपी ग्रीन्स गोल्फ कोर्स नोएडा में भाग लिया था, जिसमें मनीष कुमावत एडवोकेट ओवरऑल चैंपियन रहे थे। मनीष कुमावत एडवोकेट 2009-10 में राजस्थान हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के महासचिव भी रह चुके हैं।

आप कुमावत इंडिया पत्रिका के भी ट्रस्टी रह चुके है। **आपके निवार्चित होने पर 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से बधाई।**

भोपा का बास में हुआ शिविर, 101 यूनिट किया रक्त संग्रहित

जगदम्बा नवयुवक मंडल सेवा समिति द्वारा भोपा का बास, कुचामन में रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ। समिति के संयोजक राजकुमार कुमावत (फौजी) के अनुसार शिविर में 101 यूनिट रक्त संग्रहित हुआ। रक्त को बांगड़ ब्लड बैंक डीडवाना, श्री श्याम ब्लड बैंक कुचामन और त्रिवेणी ब्लड बैंक अजमेर की टीम द्वारा संग्रहित किया। शिविर का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। वहीं शिविर में मोहल्लावासियों एवं शहरवासियों ने बढ़ चढ़कर रक्तदान किया और शिविर को सफल बनाया। शिविर में रक्तदान करने वालों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

कुचामन सिटी के समाज सेवकों द्वारा आये दिन समाज उत्थान व सेवाकार्य की एक्टीविटी कर आयाम स्थापित किये जाते रहे हैं।

जयपुर से जीते तीनों पार्षदों का सम्मान

जयपुर नगर निगम निगम हेरिटेज व ग्रेटर के चुनाव में समाज के निम्न पार्षद विजयी हुए-

श्री राजेश कुमावत (धुंधारिया) निवासी डूंडलोद हाउस कॉलोनी हवा सड़क, जयपुर वार्ड नं. 48 हेरिटेज-बीजेपी

श्री राजेश धुंधारिया

श्रीमती कपिला कुमावत धर्मपत्नी श्री विजयपाल मारवाल, निवासी नींदडराव का रास्ता, पुरानी बस्ती, जयपुर वार्ड 59 हेरिटेज-बीजेपी

श्रीमती कपिला कुमावत

श्री राजेश कुमावत (बालोदिया) निवासी किसान मार्ग, बरकत नगर,जयपुर वार्ड नं. 135 ग्रेटर (निर्दलीय-कांग्रेस समर्थित)।

श्री राजेश बालोदिया

कुमावत (खड़गटा-धुंधारिया) जनमंगल सेवा ट्रस्ट एवं कुमावत इंडिया पत्रिका के पदाधिकारियों द्वारा पार्षदों को उनकी जीत पर बधाई देते हुए इनको साफा, माला, दुपट्टा पहनाकर व स्मृति चिह्न देकर सम्मान किया गया। श्रीमती कपिला कुमावत मोहल्ले के कार्यक्रम में व्यस्त होने से नहीं आ सकी। इस अवसर पर मोतीडूंगरी पार्षद श्री सैनी का भी सम्मान किया गया।

इस अवसर पर सर्वश्री हेमचन्द खड़गटा, नानगराम धुंधारिया, किस्तूर मल धुंधारिया, शैलेन्द्र खड़गटा, रमेश कुण्डलवाल, नवल सरथल्या, मनोज सिरस्वा, चेतन बालोदिया, विनोद बालोदिया एवं रमेश गैदर उपस्थित थे।

टीम चेतन धुंधारिया के लोगो का विमोचन

टीम चेतन धुंधारिया के लोगो का विमोचन भारतीय जनता पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष एवं आमेर विधायक सतीश पूनियां द्वारा किया गया। सतीश पूनियां को टीम द्वारा किये जा रहे सेवा कार्यों व उद्देश्यों से अवगत कराया गया तथा किये जा रहे सेवा कार्यों के बारे में विस्तार से चर्चा की गई। सतीश पूनियां ने टीम चेतन धुंधारिया द्वारा किये जा रहे सेवा कार्यों की सराहना की व टीम को शुभकामनाएं दी तथा कहा कि टीम ने कोविड-19 वैश्विक महामारी के समय भी अपनी जान की परवाह न करते हुए जो कार्य किये हैं उसके लिए पूरी टीम का आभार व्यक्त किया। श्याम प्रताप सिंह सरपंच ग्राम जाहोता ने भी टीम चेतन धुंधारिया को शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर समाजसेवी व भामाशाह चेतन धुंधारिया, जयसिंह गुडीवाल, वरिठ उपाध्यक्ष कुमावत क्षत्रिय विकास समिति, बरकत नगर, नरेन्द्र गुडीवाल सदस्य कुमावत क्षत्रिय सामूहिक विवाह समिति, खेमचन्द खड़गटा सदस्य टीम चेतन धुंधारिया, विजय कारगवाल सम्पादक सदस्य कुमावत क्षत्रिय मासिक पत्रिका, शंकर लाल बालोदिया (वन्दना फ्लावर्स) राधेश्याम खाटूवाल, श्रवण मारोठिया, ओमप्रकाश, राजकुमार कुमावत व तनुज कुमावत उपस्थित रहे।

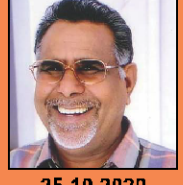

25.10.2020
श्री लालचंद मारोठिया
वरिष्ठ चित्रकार

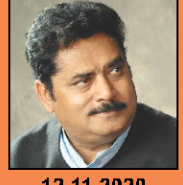

12.11.2020
पद्मश्री अर्जुन प्रजापति
(वरिष्ठ मूर्तिकार)

11.11.2020
श्री चन्द्रप्रकाश धुंधारिया

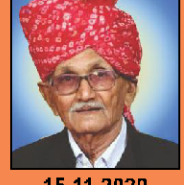

15.11.2020
श्री सालगराम वर्मा (तांगड़ा)
सीनियर फोटोग्राफर से.नि.
एसएमएस मेडिकल कॉलेज

विज्ञापन

अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

कुमावत (खड़गटा-धुंधारिया) जनमंगल सेवा ट्रस्ट (रजि.)

समस्त पाधिकारी एवं ट्रस्टीगण

रजि. कार्यालय-2806, खड़गटा, मोती डूंगरी, जयपुर-302004

श्रद्धांजलि

हमारे पूज्यनीय बहनोई साहब

श्री सालगराम वर्मा (तागड़ा)

(से.नि. सीनियर फोटोग्राफर एसएमएस मेडिकल कॉलेज)

के बैकुण्ठ धाम 15 नवम्बर, 2020 को हो जाने पर

अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

श्रद्धावन्त

साला-सलहज : महेन्द्र सिंह-सावित्री मारवाल,
भतीजा-भतीजा बहु: गजेन्द्र-विलयलक्ष्मी 935232291,
भतीजा : विक्रम मारवाल 935134050 एवं समस्त मारवाल परिवार

7, नागरिक नगर, टोंक रोड, जयपुर

सौजन्य : विवेक चिल्ड्रन एकेडमी

सीनियर सैकण्डरी स्कूल, 366-369 ए, गोवर्धन नगर, टोंक रोड, सांगानेर जयपुर

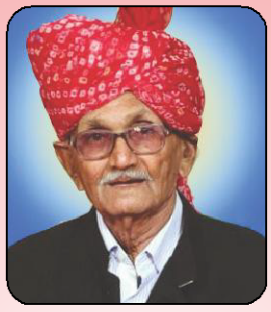

आभार

हमारे पूज्यनीय पिताजी

श्री सालगराम वर्मा (तागड़ा)

(से.नि. सीनियर फोटोग्राफर एसएमएस मेडिकल कॉलेज)

के बैकुण्ठ धाम 15 नवम्बर, 2020 को हो जाने पर

समाज बन्धुओं, सगे सम्बन्धियों, शुभचिन्तकों, मित्रजनों एवं सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारियों, सदस्यों द्वारा व्यक्तिशः, मोबाईल, वॉटसएप द्वारा शोक संदेशों द्वारा इस दुःख की घड़ी में हमें एवं परिवारजनों को सम्बल दिया, मनोबल बढ़ाया। हम सब परिवारजन आप सभी का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

आभारी

धर्मपत्नी : शान्ती देवी तांगड़ा,
पुत्र-पुत्रवधु : कंवरपाल सिंह-कमला सिंह, राजसिंह-स्व. श्रीमती एकता सिंह, दिनेश सिंह-कला सिंह एवं समस्त तांगड़ा परिवार

निवासः अनिता कॉलोनी, रामपुरा रोड, सांगानेर, जयपुर

श्रद्धांजलि

हमारे प्रिय

श्री चन्द्रप्रकाश कुमावत (धुंधारिया)

(पुत्र स्व. श्री सोहनलाल कुमावत)

का बैकुण्ठवास 11 नवम्बर, 2020 को हो गया।
हम सभी अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धान्वत

भगवती देवी (पत्नी) चेतन कुमावत (भ्राता)
उषा-मोहनलाल बिडचारिया, सुनीता-महेश जलान्धरा, संतोष-पृथ्वीराज जलान्धरा, लक्ष्मी-राजेन्द्र मारवाल (बहन-बहनोई)
पंकज, संजय, गौरव (पुत्र) तनुज (भतीजा) सूर्यांश (पौत्र) इन्द्रा-मोहिन्दर (पुत्री-दामाद) एवं समस्त धुंधारिया परिवार
मो. 9829017584, 9660038258

श्रद्धान्वत

TEAM CHETAN DHUNDHARIYA
नई सोच-सबका साथ-सबका विकास

टीम चेतन धुंधारिया

जयसिंह गुडीवाल, महेश जलान्धरा, नरेन्द्र गुडीवाल, खेमचन्द खड़गटा, विजय कारगवाल, राधेश्याम खाटूवाल, शंकरलाल बालोदिया, राकेश गैदर, गिरीश कुमावत, सतीश सिरोहिया, श्रवण कुमावत,राजकुमार, ओमप्रकाश

स्मृति शेष : अद्भुत कलाकार : स्व. श्री लाल चन्द मारोठिया

शेष पृष्ठ 6 से आगे...

आप मूलत: प्रकृति को चित्रण करने वाले उम्दा आर्टिस्ट रहे। चित्रों में प्राय: प्रशान्ति भरा एकान्त होता है। प्रत्येक चित्र की सुरम्यता के बीच मानो चन्द्रमा की शीतल रश्मिया बरस रही है। इनकी आकृतियों में पेड़ बड़े ही लुभावने होते हैं जो बिना पत्तियों के भी अत्यन्त व्यवस्थित व मोहक लगते हैं।

श्री मारोठिया ने बणेश्वर स्थित झाकम और माही नदियों के तटों पर विचरण किया और वहाँ काले व सफेद सुडोल पत्थरों को बहते हुए देखकर वैसी ही आकृतियों को दक्षता व चतुराई तारतम्य स्थापित करके उसे चित्रों में उकेरा जो जीवन्त लगते हैं एवं लयात्मक अभिव्यक्ति देकर कृति को बेजोड़ बनाते हैं। आपकी कलाकृतियों में वृक्षों की जड़ों का बाहुल्य होता है तथा गगन में उन्मुक्त पक्षी, हरियाली, आकाश की नीलिमा का अद्भुत प्रयोग से शांति और नीरव वातावरण का वेग, आवेग व संवेग होता है। इनके चित्रों में प्रकृति के लम्बे-लम्बे दरख्तों का सौन्दर्य कलात्मक भावों की ऊँचाइयों का प्रतीक है। इन्होंने पेड़ों को श्वेत-श्याम रेखाचित्रों में भी मानवीय रूप देने की कोशिश की है। उनके लैण्डस्केप में वृक्ष बेहद शांत और प्रकृति क अविभाज्य अंग है। इनके चित्रों में नीली सफेदी लिए तैरते बादल कल्पना शक्ति से उपजी एक अनोखी प्रकृति धारण किये हुए है।

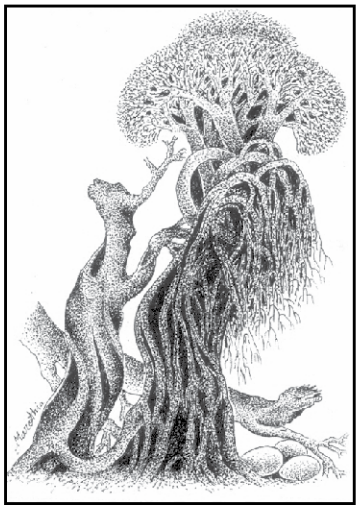

मारोठिया भरतपुर के पक्षी विहार व सरिस्का जैसे कुदरत के करिमों में पक्षियों का अद्भुत संसार देख निहारते रहते थे तथा इनकी तूलिका ने अनुभूत क्षणों को चित्रित किया, जिसमें भांति-भांति के पखेरू, उनके हावभाव एवं क्रियाकलापों को लेकर विस्तृत पक्षी शृंखला उत्कीर्ण है, जिसे कला जगत ने सराहा है। वे सुक्ष्म कला में भी माहिर थे तथा चने की एक दाल पर 13 मोर, 26 हिरण और 56 सारस चित्रित कर कला रसिकों को चमत्कृत कर दिया।

एक नजर में इनके चित्रों में सब कुछ रूखा-सूखा सा है, पेड़ है तो पत्ते नहीं, रंग है तो उनका वह वास्तविक ढंग नहीं है परन्तु यह सब होते हुए भी उनके चित्रों को देखते हुए अजीब सा सुकून मिलता है। रंगों व रेखाओं का गजब संतुलन एवं सौन्दर्य हर ओर व हर छोर बिखरा पड़ा होता है। इनमें अपनापन है व आत्मियता का अद्भुत संगम है। इनके चित्रों में लताएं एक-दूसरे से लिपटी तो कभी एकमेक या गुत्मगुत्था होती प्रकृति और जीवन के उलझाव को दर्शाती है। जल जीवन में फूल-पत्तियों का सौन्दर्य देखकर मन प्रफुल्लित हो उठता है। यह लालचन्द मारोठिया ही थे जो ऐन्द्रिकता को रूपायित करते अपने लैण्ड स्केपों में अव्याख्यायित सौन्दर्य का सृजन करते हैं। उनके चित्र सच में दृश्य यथार्थ का सर्वथा नया मुहावरा लिए हैं।

श्री मारोठिया मृदुभाषी, सौम्य प्रकृति के उन चुनिन्दा कलाकारों में हैं जिनकी परम्परागत एवं आधुनिक दोनों शैलियों में समान पकड़ थी। आपने नवोदित चित्रकारों के उन्नयन के लिए नि:शुल्क प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये। आपके द्वारा रचित नूतन व पुरातन कलाकृतियों का संग्रहण अनेक व्यक्तियों व कला विथीकाओं द्वारा किया गया है। केन्द्रीय व राज्य स्तरीय कला अकादमियों द्वारा पुरस्कृत यह कलाकार अलंकरणों व सम्मान के सच्चे हकदार थे।

25 अक्टूबर, 2020 को श्री लालचन्द मारोठिया अनेक प्रशंसकों व मित्रों को छोड़कर लम्बी यात्रा पर चले गये, जहाँ से कोई लौटकर नहीं आता। कुमावत समाज ने एक प्रतिष्ठित चित्रकार खो दिया जिस पर सभी को गर्व था। **'कुमावत इंडिया' पत्रिका परिवार श्री मारोठिया के निधन पर अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करता है एवं इन्हें नमन करता है।**

मुफ्त की चीजें जीवन का मार्ग भटका सकती है

जब कोई चीज मुफ्त मिल रही हो, तो समझ लेना कि आपको इसकी कोई बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी। नोबेल विजेता डेसमंड टुटू ने एक बार कहा था कि 'जब मिशनरी अफ्रीका आए, तो उनके पास बाईबल थी, और हमारे पास जमीन। उनहोंने कहा %हम आपके लिए प्रार्थना करने आये हैं।' हमने आखें बंद कर लीं, जब खोलीं तो हमारे हाथ में बाईबल थी, और उनके पास हमारी जमीन।'

इसी तरह जब सोशल नैटवर्क साइट्स आईं, तो उनके पास फेसबुक और व्हाट्सएप थे, और हमारे पास आजादी और निजता थी।

उन्होंनें कहा 'ये मुफ्त है।' हमने आखें बंद कर लीं, और जब खोलीं तो हमारे पास फेसबुक और व्हाट्सएप थे, और उनके पास हमारी आजादी और निजी जानकारियां।

जब भी कोई चीज मुफ्त होती है, तो उसकी कीमत हमें हमारी आजादी दे कर चुकानी पड़ती है।

'ज्ञान से शब्द समझ आते हैं, और अनुभव से अर्थ'

– युवा समाजसेवी गणेश मोरवाल, मो. 9251755338

कुमावत समाज की देन

8वीं सदी से स्थापत्य, शिल्प कला व मूर्तिकला

वास्तु व शिल्पकला के क्षेत्र में कुमावत समाज के लोग (चाहे वे कारीगर, सिलावट, चेजारा आदि नाम से जाने जाते हैं) अत्यन्त कुशल थे। चित्तौड़ का ही उदाहरण लें तो किले में महत्वपूर्ण भवन उनकी देन हैं। उनकी यह कला मुँह बोलती है जिनका विवरण निम्नानुसार है:-

1. श्रृंगार चंवरी कुम्भ श्याम, कीर्ति स्तम्भ,सतबीस देवरी,और गौमुख,का इलाका, कुंभा के महल। राजमहल होने से यह सबसे प्रभावशाली स्थान रहा प्रतीत होता है। 2. दुसरा महत्वपूर्ण इलाका कुकडेश्वर मंदिर अन्नपूर्णा मंदिर माता का कुण्ड का भाग है। जो 8वीं शताब्दी के आसपास उन्नत अवस्था में था। 3. सूर्य कुण्ड सूर्य मंदिर आदि का भाग और 4. जैन कीर्ति स्तम्भ नील कंठ मंदिर तक का भाग हो सकता है। यही मोटे तौर पर चोथे भाग को पहले के साथ देखा जा सकता है। दुर्ग बनने के साथ भवनों व मंदिरों का निर्माण का क्रम जारी रहा प्रतीत होता है। क्योंकि 8वीं शताब्दी के भवनों के अवशेष आज भी विद्यमान है। इस समय के वास्तु शिल्पियों के नाम तो इन अवशेषों में पाये नही गये। किन्तु जिस शैली में यह निर्माण सतत् जारी रहा उससे यह अनुमान लगाया जा सकता है, कि 8वीं सदी के निर्माण शिल्पी भी आज के **'कुमावत'** ही रहे हैं। भले ही उन्हें 'सलावट' जाति के नाम से जाना जाता रहा हो, दुर्ग पर परमार और सोलंकियो के अधिकार काल में कुछ जैन मंदिर व वैष्णव मंदिर बनना ज्ञात हुआ है। जैन अनुश्रुतियों से हरिभद्र सुरी के समय भी यही जैन मंदिर का होना बताया गया है। यहाँ समरसिहं के शासनकाल में बहुत विकास हुआ, इस काल में भवन निर्माण शिल्पकारों का बडा सम्मान होना उल्लेखनीय है। अलाउदीन खिलजी के समय यहाँ के वैभवशाली मंदिरों, भवनों को तहस नहस कर दिया गया, कई शिल्प सृजन की धरोहरों का नाम ही खत्म कर दिया गया, इसी के साथ उन शिल्पकारों का उल्लेख भी मिटा दिया गया, पर जो अवशेष हैं, वह उनकी अनूठी मिसाल है। चित्तौड़ मे निर्माण कार्य का दुसरा क्रम समीर से शुरू होता है। जो कुंभा से रायमल के शासनकाल काल तक चलता रहा। **महाराणा कुंभा का शासनकाल मेवाड़ के इतिहास में स्वर्ण युग कहा जा सकता है। कुमावत जाति के इतिहास में भी इस काल को स्वर्ण युग माना जा सकता है।** इस काल में कुमावत जाति में अनेक वास्तु शिल्पियों का जन्म हुआ। जिन्होंने मेवाड़ की धरती पर अनेक ऐतिहासिक धरोहरों का निर्माण किया था। कुंभा के शासनकाल में चित्तोड़ मे लगभग सभी भग्नमंदिरो को नये ढंग से बनाया गया। जलाशयों का जीर्णोद्धार किया गया, दुर्ग की प्राचीरों रक्षापंक्तियों को मजबूत बनया गया यहीं नहीं आने जाने के मार्गों को सुगम व सुरक्षित बनाया गया। यह काम कुमावत कारीगरों ने बड़े ही लगन और वास्तु शास्त्र के अनुसार करके कुमावत जाति का इतिहास में गौरव बढ़ाया, **यह क्रम सांगा और रतन सिंह के शासनकाल काल तक चलता रहा** पर बहादुरशाह के आक्रमण के साथ ही रूक गया जो मुगलों से संधि के बाद चालू हुआ। पर जो काम महाराणा कुंभा के शासनकाल में हुआ तथा तब जो सम्मान वास्तु शिल्पियों को प्राप्त था, उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। वास्तु शिल्पियों को सम्मान तो 8वीं सदी से मिलता रहा है, पर **कुंभा के शासनकाल में शिल्पियों को सांमतो के समान दर्जा दिया गया।**

महान् वास्तुकार **मंडन के दुसरे पुत्र ईश्वर का उल्लेख जावरा की वि.स. 1554 की प्रशस्ति में है।** उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित अप्रकाशित खरतरगच्छ के एक लेख में ईश्वर के पुत्र छीतर का उल्लेख है यही उल्लेखित **खेता खनारिया के दो पुत्र मंडन व नाथा मंडन के दो पुत्र गोविन्द व ईश्वर, ईश्वर के पुत्र छीतर इसी तरह कुम्भा के समकालीन एक उल्लेखनीय परिवार का वर्णन है।** वास्तु शास्त्र व भवन निर्माण के **शिल्पकार लाखा के पुत्र जैता मंडावरा व उसका भाई नारद** जिसका उल्लेख वि स 1495 की चित्तोड की महावीर प्रसाद प्रशस्ति में है। इस परिवार के कई लेख मिले है, जिनमें इस परिवार के द्वारा किये गये निर्माण कार्यों का भी उल्लेख है। पर वि.स. 1515 का लेख महत्वपूर्ण है। इसमे लाखा मंडावरा को **'सकलवास्तुशास्तरविशारद'** कहा गया है। जो इसकी महानता को दर्शाता है। विभिन्न लेखों में जैता के पुत्रों का वर्णन है। जैता के पुत्रों के नाम नापा, पामा, पूंजा, भूमि, चुथी, व बलराज, थे इनके अलावा भी चित्तौड़ मे कई शिल्पकार हुए हैं। वि स 1538 में एक अप्रकाशित मूर्ति के लेख में **शिल्पकार शिहा** द्वारा शांतिनाथ की मूर्ति बनाने का उल्लेख है। शत्रुंञ्जय के वि.स. 1587 के लेख में कई शिल्पकारों का यहाँ जीर्णोद्धार करने का उल्लेख मिलता है। 18 वीं सदी में भी कई शिल्पकारों का वर्णन है। नीलकंठ मंदिर के स्तम्भ पर वि स 1787 का लेख है। इसमे **सलावट बापा के पुत्र बीरभाणा मंडावरा** का वर्णन है। वि स 1832,1833,1839 के लेखों में कई गजघर शिल्पकारो के नाम उल्लेखित है, जिनके नाम के आगे सलावट लिखा है! इस तरह से चित्तोड के इतिहास में चित्तौड़गढ़ के निर्माण में **कुमावत जाति** के वास्तु शास्त्रीयों व शिल्पकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

चित्तौड़ के इतिहास में कई स्थापत्य कला के उल्लेखनीय शिल्पियों हुए हैं। जिनकी भल्लभ सूर्य से सम्बन्धित शक स0 1028 के शिलालेख में **'राम देवः सुधीः सुव्यक्ता जसदेव सूनुरूदकारीत्सूत्तधारागग्रणी'** शब्द अंकित है। इसी प्रकार वि स 1207 की कुमारपाल की प्रशस्ति में **सूत्रधार (शिल्पकार)** का नाम स्पष्ट नही है। समिध्देश्वर के मंदिर के स्तम्भ पर वि.सं. 1286 के दो लेख खुदे है। जिनपर शिल्पकारों

के नाम खुदे है। रावल समरसिंह की चित्तोड की प्रशस्ति में **'सज्जनेन समुत्कीर्णा प्रशस्तिः शिल्पानामुना'** शब्द है जो शिल्पकारो की प्रशस्ति में लिखा गया है। पर शिल्पकारो की कुछ विशिष्ट परिवारों का उल्लेख 15वीं शताब्दी में चित्तोड़ के इतिहास में दर्ज है। चित्तोड़ के **स्थापत्य सूत्रधार वीजल के पुत्र माना और माना के पुत्र वीस व वीसल का उल्लेख मिलता है।** इतिहासकार रतन चंद्र ने अपने लेख मेवाड के कुशल शिल्पी में इनका विस्तार से वर्णन लिखा है! माना के लिए कई सुन्दर प्रशाद निर्माण के लिए लिखा है! **इस परिवार के लिए 'गुणवान' लेख में भी उल्लेख है।** जिसमे लिखा है! **मनाख्यो सकल गुणगाण बीजल सुखः शिल्पी जातो गुणगाण, युतो बीवसल ईतिट्ठ दुसरा महत्वपूर्ण उल्लेख महान वास्तुकार मंडन खनारिया के परिवार का है,** मंडन के पिता खेता का भी उल्लेख है। जिसको कई इतिहासकारो ने गुजरात से बुलाया गया बताते हैं। पर इसका खंडन स्वयं मंडन ने अपने लिखे ग्रन्थो मै **'श्री मद्देशे मेदपाटाभिगाने छैत्रूयोशभूत् सूत्रधारो वरिष्ठ'** वर्णन किया है। जिससे खेता को मेवाड़ वासी कहलाने में गर्व प्रकट किया है। राजवल्लभ मंडन में मंडन ने मेवाड़ में किये गया निर्माण कार्य की व महाराणा कुंभा का वर्णन बड़े ही गर्व के साथ किया है। मंडन खनारिया उस समय का महान वास्तुकार रहा है। जिसने वास्तुकला पर कई ग्रन्थों की रचना की है। मंडन के छोटे भाई नाथा ने भी कई सुंदर प्रसाद बनाये है उसने **'वास्तुमंजरी'** नामक ग्रंथ लिखा है! मंडन का पुत्र **गोविन्द** भी वास्तु शास्त्र व भवन निर्माण का बडा शिल्पकार हुआ है। जिसने वास्तु शास्त्र पर तीन ग्रन्थो की रचना की है : **'यथाट्ठकलानिधि', 'उध्दार घोरणि' और 'द्वार दीपिका'** मुख्य हैं। यह महाराणा रायमल के समय में राज शिल्पी था।

आओ गर्व करें हम खुद पर, अपना
समाज हे सबसे बढ़कर।
वास्तु कला है अपनी शान, करते हैं हम
युग निर्माण।
गढ़ और किले हवेली मंदिर, एक-एक
रचना अति सुंदर।
नित्य नए देते आयाम, माटी से रच रहे हैं
राम
एक कल्पना का ये हाल, बनी मूर्ति बड़ी
विशाल
सभी इसे विरासत समझे, अनी कला पे
हर कोई रीझे
कारीगरी सशक्त खड़ी हे, देश विदेश में
पहचान बढ़ी है।
युग निर्माण के साखी बनकर, खड़े
कुमावत सीना तानकर।
कहीं है रंगों की बौछार, तीज त्योहार की
है भरमार।
सादा जीवन उच्च विचार, सरल हृदय तो
हैर बार
माटी का माटी से प्यार, श्रम से जीवन हो
साकार।

-भारती वर्मा

बहस : भात और दहेज की प्रासंगिकता

रीति रिवाज हमारे संस्कार हैं जो हमें हमारे पूर्वजों से मिले हैं इनका संबंध हमारे दैनिक जीवन से लेकर विशेष अवसरों तक होता है रीति-रिवाजों में हर पीढ़ी का अपनी ओर से कुछ ना कुछ योगदान अवश्य होता रहा है। वर्तमान परिपेक्ष में रीति-रिवाजों को पूरा करने में जहां सादगी होनी चाहिए वहाँ भरपूर दिखावा और आडंबर सम्मिलित हो गया है इसी कारणवश हमें हमारे रीति रिवाज बोझ लगने लगे हैं। उसी का परिणाम है कि आज यह बहस का मुद्दा है। रीति-रिवाजों को खत्म करना कोई समाधान नहीं हो सकता अपितु इन की सीमा निर्धारित की जानी चाहिए ताकि हमारे रीति रिवाज भी कायम रह सकें और अनावश्यक बोझ भी ना बने तथा व्यक्ति व परिवार इनका खुशी-खुशी निर्वाह कर सकें।

उत्तर वैदिक काल में प्रारंभ हुई यह परंपरा आज अपने घृणित रूप में हमारे सामने हैं इस काल में युवती का पिता उसे अपने पति के घर विदा करते समय कुछ तोहफे दिया करता था जिसे वर पक्ष सहर्ष स्वीकार कर लेता था परंतु मध्यकाल तक आते-टाते इसे स्त्रीधन का नाम दे दिया गया और वर्तमान में यह एक अभिशाप का रूप ग्रहण कर चुकी है। इसी प्रकार भात एक ऐसी रस्म थी कि भाई अपने बहन को चुनरी ओढ़ाकर उसका मान रखता था, विवाह में पीहर पक्ष का खाली हाथ ना आना एक सभ्यता और रस्म थी। भाई अपने हाथों में बहन को चुनरी ओढ़ाकरउसका मान रखता था किंतु वर्तमान में यह पूरे कुटंब के कपड़ों से लेकर आभूषण नकद और जमीन देने तक पहुंच चुका है जो किसी भी दृष्टि से ठीक नहीं है जिस प्रकार कोई व्यक्ति हमें भेंट या तोहफा देते हैं तो हमें प्रसन्नता होती है और वह हमारी स्मृतियों में स्थित रहता है और उसका स्मरण कराता है उसी प्रकार भाई द्वारा दी गई चुनरी बहन का मान बढ़ाती है और पिता द्वारा दिए गए तोहफे अनजान परिवार में उनके होने का अहसास कराते हैं कि वर्तमान में दोनों रिवाजों ने दिखावे का रूप ले लिया है इस दिखावे के चक्कर में भाई और पिता अपने कड़े परिश्रम की पूँजी इस दिखावे में खर्च करनी पड़ती है जो कि व्यक्ति, परिवार कुटुंब और समाज के लिए कतई भी लाभकारी नहीं है रिवाजों को खत्म करना या पूरी तरह प्रतिबंधित करना समाधान नहीं हो सकता। रिवाज कोई भी हो पूरी तरह प्रतिबंधित ना करते हुए इसे बहुत ही ज्यादा सीमित अथवा प्रतीकात्मक किया जाना उचित है।

- श्रीमती रवीना तोंदवाल, बूंदी।

एक बहस : दहेज तथा भात प्रथा का औचित्य

नमस्कार! एक बार पुन: हम ''एक बहस'' के मंच पर एक ऐसे शीर्षक पर अपने विचारों के साथ एकत्र हुए हैं जिस पर हम आज से पहले भी ना जाने कितनी ही बार विचार-विमर्श तथा वार्तालाप कर चुके हैं। वास्तविकता यह है कि दहेज प्रथा, भात-प्रथा, मृत्युभोज, जामणा प्रथा इत्यादि ऐसी जटिल कुरीतियाँ हैं जो आदि काल से हमारे समाजों में चली आ रही है और जिनसे हम आज तक जकड़े हुए हैं। इन कुरीतियों के दुष्परिणामों से हम भली भांति परिचित हैं तथा कहीं ना कहीं कुछ हद तक हम सभी पीड़ित हैं और मेरा मानना यह है कि अब इन कुरीतियों के सन्दर्भ में समाज को आवश्यक विचार करके ठोस निर्णायक कदम उठाने का समय आ गया है। इन मुद्दों पर चर्चा तो हम लोग बहुत करते हैं परन्तु क्रियान्वयन की दिशा में अब तक कोई सकारात्मक कदम नहीं उठा पाए हैं। इस दिशा में यदि हम वास्तव में सुधार चाहते हैं तो सम्पूर्ण समाज में नियमों का अनिवार्य रूप से क्रियान्वयन किया जाए, यह नितान्त आवश्यक है। हालांकि अनेक स्थानों पर इन कुरीतियों पर नियंत्रण की पहल की जा चुकी है। कई गांवों ने इन नियमों को समग्र रूप से अपनाया है तथा कई परिवारों ने इस दिशा में अनूठी मिसाल पेश की है परन्तु इन सबकी कोशिशों को बल तक ही मिल सकता है जबकि इन्हें कठोर सामाजिक नियमों का रूप देकर सम्पूर्ण कुमावत समाज में समान रूप से लागू किया जाए। आज ऐसे कई परिवार हैं जो कि इन दकियानूसी प्रथाओं से नाखुश तो हैं परन्तु ''**लोग क्या कहेंगे**'' इस लोक लाज के कारण उन्हें मजबूरन आर्थिक विषमता तथा गरीबी के बावजूद इन कुरीतियों की आग में झुलसना पड़ता है। अनेक परिवार वर्षों तक कर्जे से उबर नहीं पाते हैं। इन सब कुरीतियों को जड़ से खत्म करने के लिए हमें एकजुट होकर प्रयास करने होंगे। ये प्रयास कुछेक परिवारों या गांवों या क्षेत्रों तक ही सिमट कर नहीं रह जाए ये हम सबका दायित्व है। इसके लिए कुछ बिन्दुओं पर विचार करना आवश्यक है कि विवाह में उपहार स्वरूप दिए जाने वाले सामानों की संख्या सीमा तथा राशि सीमा को तय किया जाए तथा निश्चित सीमा से अधिक सामग्री का लेन-देन अनिवार्य रूप से वर्जित हो, समारोहों में भोजन सामग्री भी सीमित मात्रा में बनायी जाए। लोग दिखावे के फेर में होड़ा-होड़ी करने, अनाप-शनाप भोजन बनवा लेते हैं जिसे समारोह के पश्चात् बच जाने पर फेंकना पड़ता है जिससे अन्न का निरादर तथा बर्बादी होती है। भात व जामणा की प्रथा को सीमित खर्च में निभाया जाए। जिस परिवार से संबंधित कार्यक्रम हैं सिर्फ उसके सदस्यों को वस्त्रादि देना पर्याप्त है। यदि उनके अतिरिक्त किसी को वस्त्र या उपहार देने के इच्छुक हो तो परिवारजन स्वयं ही दें, पीहरपक्ष पर अनावश्यक बोझ डालना उचित नहीं है। यदि प्रत्येक परिवार में इसी प्रकार से लेन-देन होगा तो किसी को शिकायत का मौका नहीं मिलेगा इसी प्रकार से मृत्यु-भोज व बारहवीं पर पहरावणी प्रथा सिर्फ परिवार जन के बिछोह से आहत परिवार पर एक बोझ है, इसके अलावा इन रीतियों का और कोई औचित्य नहीं है। इन अवसरों पर 50-100 व्यक्तियों का भोज पर्याप्त होता है। शहरों में इस दिशा में पहल प्रारम्भ हो चुकी है। अनेक लोगों ने मृत्यु भोज में जाना बन्द कर दिया है किन्तु गांवों में आज भी यह कुरीति वृहद् रूप से प्रचलन में है वहीं इसके विपरीत विवाह इत्यादि समारोहों में ग्रामीण क्षेत्रों में साधारण रूप से कम दिखावे के साथ सीमित संसाधनों का प्रयोग करके अनावश्यक खर्चे किए जाते हैं जबकि शहरों में तो क्या स्थिति है, यह सर्वविदित है। इन आडम्बरों पर दिखावे की भावना पर अंकुश बेहद आवश्यक है।

वर्तमान समय में कोरोना महामारी का एक बड़ा योगदान हमारे समाज से इन कुरीतियों को काफी हद तक नियंत्रित करने में रहा है। परिस्थितिवश ही सही, हमारी मजबूरी हमारे लिए वरदान भी साबित हुई है। आज के परिप्रेक्ष्य में बात की जाए तो सब कुछ ठीक तरीके से चल रहा है। जिस प्रकार से वर्तमान में सामाजिक रीतियों का क्रियान्वयन हो रहा है उसी प्रारूप में भविष्य में सदैव इनकी पालना की जाए तथा इन्हें नियमों का रूप दिया जाए, यह दायित्व समाज के शीर्ष निर्णायक मण्डलों व समीतियों का है। पूरे देश में ''कुमावत'' समाज से सम्बद्ध कोई भी परिवार हो तथा कहीं का भी निवासी हो, इन नियमों का कड़ाई से पालन करे तथा नहीं करने पर उनके विरुद्ध कार्यवाही हो, तब ही इन कुरीतियों को हम सम्पूर्ण समाज से जड़ से समाप्त कर सकते हैं।

- उर्वशी बालोदिया

अजमेरा परिवारों का नववर्ष स्नेह मिलन

अजमेरा (कुमावत) परिवारों का पूर्व वर्षों की भांति इस वर्ष नववर्ष स्नेह मिलन व पौषबड़ों का आयोजन नये वर्ष 2021 को प्रारंभ में दिनांक 3 जनवरी, 2021 रविवार को 'अजमेरा गार्डन', मान की ढाणी, सांगानेर, जयपुर में आयोजित किया जाएगा। समारोह में राजस्थान में निवास करने वाले सभी अजमेरा (कुमावत) परिवार भाग लेंगे। समारोह में परिवार के सबसे वरिष्ठ सदस्य को सम्मानित किया जाएगा। विशेष योगयता प्राप्त विद्यार्थियों को भी सम्मानित कर उत्साहित कियाजाएगा। महिलाओं एवं बच्चों के खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजित किया जाएगा।

- सोहनलाल अजमेरा,
वरिष्ठ समाज सेवी, सांगानेर

सुदामा को ग़रीबी क्यों मिली

आज तक आपको ये जानकारी होगी कि संदीपन आश्रम में गुरु माता ने सुदामा को चने दिए और कहा कि तुम व कृष्ण जंगल से लकड़ी ले आओ। उन चनों को सुदामा अकेले ही खा गए व कृष्ण भूखे ही रहे। आखिर सुदामा ने ऐसा क्यों किया?

अगर अध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखा जाय तो सुदामा जी बहुत धनवान थे। जितना धन उनके पास था किसी के पास नही था। लेकिन अगर भौतिक दृष्टि से देखा जाये तो सुदामाजी बहुत निर्धन थे।

आखिर क्यों जानिए-

एक ब्राह्मणी थी जो बहुत गरीब निर्धन थी। भिक्षा माँगकर जीवन यापन करती थी। एक समय ऐसा आया कि पाँच दिन तक उसे भिक्षा नही मिली वह प्रतिदिन पानी पीकर भगवान का नाम लेकर सो जाती थी।

छठवें दिन उसे भिक्षा में दो मुट्ठी चने मिले, कुटिया पर पहुँचते-पहुँचते रात हो गयी। ब्राह्मणी ने सोचा अब ये चने रात में नहीं खाऊँगी, प्रात:काल भगवान को भोग लगाकर खाऊँगी । यह सोंचकर ब्राह्मणी ने चनों को कपडे में बाँधकर रख दिया और भगवान का नाम जपते-जपते सो गयी...!

देखिये समय का खेल. ...कहते हैं.....पुरुष बली नहीं होत है! समय होत बलवान!!

ब्राह्मणी के सोने के बाद कुछ चोर चोरी करने के लिए उसकी कुटिया में आ गये... चोरों ने इधर उधर बहुत ढूँढा उन्हें चने की बँधी पोटली मिल गयी चोरों ने समझा इसमे सोने के सिक्के हैं इतने में ब्राह्मणी जग गयी और शोर मचाने लगी...! चोर वह पोटली लेकर भाग गये।

गाँव के सारे लोग चोरों को पकड़ने के लिए दौड़े, पकड़े जाने के डर से सारे चोर संदीपन मुनि के आश्रम में छिप गये। (संदीपन मुनि का आश्रम गाँव के निकट था जहाँ भगवान श्री कृष्ण और सुदामा शिक्षा ग्रहण कर रहे थे)।

गुरुमाता को लगा की कोई आश्रम के अन्दर आया है गुरुमाता देखने के लिए आगे बढीं, चोर समझ गये कोई आ रहा है चोर डर गये और आश्रम से भाग गये! भागते समय चोरों से वह पोटली वहीं छूट गयी...।

इधर भूख से व्याकुल ब्राह्मणी ने जब जाना कि उसकी चने की पोटली चोर उठा ले गये! तो ब्राह्मणी ने श्राप दे दिया कि..... 'मुझ दीनहीन असहाय के चने जो भी खायेगा वह दरिद्र हो जायेगा।'

उधर प्रात: काल गुरु माता आश्रम में झाड़ू लगाने लगी झाड़ू लगाते समय गुरु माता को वही चने की पोटली मिली, गुरु माता ने पोटली खोल के देखी तो उसमे चने थे...! सुदामा जी और कृष्ण भगवान जंगल से लकडी लाने जा रहे थे।

गुरु माता ने वह चने की पोटली सुदामा जी को दे दी और कहा बेटा ! जब वन में भूख लगे तो दोनों यह चने खा लेना...!

सुदामा जी जन्मजात ब्रह्मज्ञानी थे। ज्यों ही चने की पोटली सुदामा जी ने हाथ में ली, त्यों ही उन्हें सारा रहस्य मालुम हो गया...!

सुदामा जी ने सोचा, गुरु माता ने कहा है..... यह चने दोनों बराबर बाँट के खाना। लेकिन ये चने अगर मैंने त्रिभुवनपति श्री कृष्ण को खिला दिये तो सारी सृष्टि दरिद्र हो जायेगी। नहीं-नहीं मैं ऐसा नहीं करुँगा मेरे जीवित रहते मेरे प्रभु दरिद्र हो जायें मैं ऐसा कदापि नहीं करुँगा। मैं, ये चने स्वयं खा जाऊँगा लेकिन कृष्ण को नहीं खाने दूँगा...! और सुदामा जी ने सारे चने खुद खाकर दरिद्रता का श्राप स्वयं ले लिया। लेकिन अपने मित्र श्रीकृष्ण को चने का एक भी दाना चना नहीं दिया....! ऐसे होते हैं मित्र।

मित्रों, आपसे निवेदन है कि अगर मित्रता करें तो सुदामा जैसी करें, और कभी भी जानते बूझते अपने मित्रों को धोखा ना दें... व उसको कष्टों से बचाये।

हमारे धर्म ग्रंथ ज्ञान का भंडार

एक बूढ़ी माता मन्दिर के सामने भीख माँगती थी। एक संत ने पूछा - आपका बेटा लायक है, फिर यहाँ क्यों?

बूढ़ी माता बोली - बाबा, मेरे पति का देहान्त हो गया है। मेरा पुत्र परदेस नौकरी के लिए चला गया। जाते समय मेरे खर्चे के लिए कुछ रुपए देकर गया था, वे खर्च हो गये इसीलिए भीख माँग रही हूँ।

सन्त ने पूछा - क्या तेरा बेटा तुझे कुछ नहीं भेजता?

बूढ़ी माता बोलीं - मेरा बेटा हर महीने एक रंग-बिरंगा कागज भेजता है जिसे मैं दीवार पर चिपका देती हूँ। सन्त ने उसके घर जाकर देखा कि दीवार पर 60 bank drafts चिपकाकर रखे थे। प्रत्येक draft 50,000 राशि का था। पढ़ी-लिखी न होने के कारण वह नहीं जानती थी कि उसके पास कितनी सम्पत्ति है। संत ने उसे draft का मूल्य समझाया।

उन माता की ही भाँति हमारी स्थिति भी है। हमारे पास धर्मग्रन्थ तो हैं पर माथे से लगाकर अपने घर में सुसज्जित करके रखते हैं जबकि हम उनका वास्तविक लाभ तभी उठा पाएगें जब हम उनका अध्ययन, चिन्तन, मनन करके ज्ञान अर्जित करें व उसे अपने जीवन में उतारकर जनकल्याण के लिए उपयोग में लेवें।

हम हमारे ग्रन्थों की वैज्ञानिकता को समझे , हमारे त्यौहारों को मनाने की वैज्ञानिकता को समझे और ठीक से अनुसरण करें।

वि/1 श्री महेश चन्द जलान्धरा, झोटवाड़ा, जगपुर
वि/2 श्री नीरज धुन्धारिया, आनन्दपुरी, जगपुर
वि/3 श्री मनीष खोबाल कुमावत एडवोकेट, जयपुर
वि/4 श्री मनोज कुमार सिरस्वा, जयपुर
वि/5 श्री शंकर लाल जायलवाल, टोंक रोड, जयपुर
वि/6 श्री यतेन्द्र अजमेरा, त्रिमूर्ती सर्किल, जयपुर
वि/7 श्री राकेश चन्द सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/8 श्री संदीप नागा, बापू नगर, जयपुर
वि/9 श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा, भौरोदिया जगपुर
वि/10 श्री मोहन कुमार घोड़ीवाल, जगपुर
वि/11 श्री नवल सरथल्या, महावीर नगर, जगपुर
वि/12 श्री पंकज कुमावत, बैरा झोटवाड़ा, जयपुर
वि/13 श्री चेतन कुमावत, डीसीएम, जयपुर
वि/14 श्री मनोज मान्नीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/15 श्री दीपक सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/16 श्री लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल, जयपुर
वि/17 श्री योगेश वर्मा, खड़गटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/18 श्री शैलेन्द्र खटगटा, टोंक रोड, जगपुर
वि/19 श्री विनोद बालोदिया, दुर्गापुरा जगपुर
वि/20 श्री ओमकार मल घोड़ेला, रींगस रोड, जगपुर
वि/21 श्री रामपाल मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/22 श्री रामप्रकाश चेरा, मुरलीपुरा, जयपुर
वि/23 श्री मोहनलाल घोड़ेला, नींदड़, जयपुर
वि/24 श्री कालूराम होदकास्या, नींदड़, जयपुर
वि/25 श्री जयनारायण मारवाल, जोटवाड़ा, जयपुर
वि/26 श्री महेंद्र खरोलिया, चांदपोल बाजार, जयपुर
वि/27 डॉ. सीताराम नागा, जोबनेर, जगपुर
वि/28 श्री शंकरलाल मामोरिया, 22 गोदाम, जगपुर
वि/29 श्री रामस्वरूप खोराणिया, जयपुर
वि/30 श्री नरेंद्र कुमार आर्य, ब्यावर, अजमेर
वि/31 श्री चेनसुख चड़ीवाल, बगरू, जयपुर
वि/32 श्री चांदमल कुमावत (घोड़ेला), मुंबई
वि/33 श्री राजसिंह गैदर, टोंक रोड, जयपुर
वि/34 श्री मनोज ब्याडवाल, श्रीराम नगर झोटवाड़ा
वि/35 श्री गोपाल मारवाल, श्रीमाधोपुर, सीकर
वि/36 श्री मनीष मारवाल, निवारू रोड, जगपुर
वि/37 श्रीरूप सिंह कारगवाल, जगपुर
वि/38 श्री दया प्रकाश जलांधरा, इंदौर
वि/39 श्री नवीन कुमार वर्मा भौरोदिया, इंदौर
वि/40 श्री राजेंद्र प्रसाद, तमिलनाडु
वि/41 श्री शिव भगवान चेजारा, सिरस्वा, सीकर
वि/42 श्री तेज प्रकाश नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/43 श्री पृथ्वीराज जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/44 श्री मोहन कुमार बालोदिया, जयपुर
वि/45 श्री पुरुषोत्तम लाल घोड़ेला, जयपुर

विशिष्ट संरक्षक

वि/46 श्री ललित स्वरूप पोडेला, जयपुर
वि/47 श्री विजय कुमावत (भौरोंदिया), जयपुर
वि/48 श्री अरविंद सिरस्वा, पचार, सीकर
वि/49 श्री मूलचंद खोबाल, जगपुर
वि/50 श्रीमती शशि वर्मा, धुमुनिगा, दुर्गापुरा, जगपुर
वि/51 श्री राजेंद्र जूनवाल टोंक फाटक, जयपुर
वि/52 श्री सतीश चंद खाटूवाल, जयपुर
वि/53 श्री नन्द किशोर सिरस्वा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/54 श्री संतोष खरनारिया कुमावत, अजमेर
वि/55 श्री प्रमोद कुडावलिया, छत्तीसगढ़,
वि/56 श्री मनोज बड़ीवाल, रायपुर, छत्तीसगढ़
वि/57 श्री श्रीराम नीमिवाल, जगपुर
वि/58 श्री भीवाराम दम्भीवाल, निर्माण नगर, जगपुर
वि/59 श्री पन्नालाल सिरस्वा, निर्माण नगर, जगपुर
वि/60 श्री रामस्वरूप कुमावत, चड़ीवाल, मुम्बई
वि/61 श्री हेमेंद्र सिंह गैदर, टोंक रोड, जयपुर
वि/62 श्री नाथुलाल चेजारा (सिरस्वा), जयपुर
वि/63 श्री गोपाललाल बासनीवाल, जयपुर
वि/64 श्री मोहनलाल मामोड़िया, जयपुर
वि/65 श्री रामकुमार बिरथलिया, जयपुर
वि/66 श्री जगदीश कुमावत
वि/67 श्री मुकेश कु. कुदीवाल, झोटवाड़ा, जगपुर
वि/68 श्री रोहिताश मोरवाल, झोटवाड़ा, जगपुर
वि/69 श्री शुभकरण किरोड़ीवाल, सूरत
वि/70 श्री नान्छीलाल कुदूदीवाल, जयपुर
वि/71 श्री रमेश चंद मान्नीवाल, त्रिनगर, दिल्ली
वि/72 श्री राधेश्याम घासोलिया, दिल्ली
वि/73 श्री इंसराज मारवाल, ब्यावर
वि/74 श्री मेघराज सिरस्वा, छत्तीसगढ़
वि/75 श्री सूरजमल अनावड़िया, लाल कोठी, जगपुर
वि/76 श्री छीतरमल धुंधारिया, निवारू रोड, जगपुर
वि/77 श्री रामगोपाल खोराणिया, सोडाला, जगपुर
वि/78 श्री हरिशंकर राजोरा, जयपुर
वि/80 डॉ. प्रवीण कुमार मारवाल, झुंझुनूं
वि/81 श्री अर्जुन लाल धुन्धारिया, जयपुर
वि/82 श्री ओम प्रकाश धुन्धारिया, जयपुर
वि/83 श्री गोविंद नारायण तांगड़ा, जयपुर
वि/84 श्री सुरेंद्र सिंह तारकसी, बापू नगर, जयपुर
वि/85 श्री माधव दास बालोदिया, जगपुर
वि/86 श्री मोहित धुन्धारिया, जयपुर
वि/87 श्री बाबूलाल मंडावरा, जयपुर
वि/88 श्री मनीष वर्मा (सिरस्वा), दुर्गापुरा, जगपुर
वि/89 श्री हेमांक खड़गटा, मोती डूंगरी, जयपुर
वि/90 श्री कैलाश जलान्धरा, माल की द्वाणी, दूदू
वि/91 श्री लोकेश जांहाजपुरिया, नंदपुरी, जगपुर
वि/92 श्री नन्दकिशोर आम्बीवाल, रिंगस, सीकर
वि/93 श्री बाबूलाल धुन्धारिया, वीकेआई, जयपुर
वि/94 श्री रामसिंह बैथाड़िया, तुलसी सेन्ट्रल मैन बाजार, सांगानेर
वि/95 श्री मदन लाल कुमावत, निर्माण नगर, जयपुर
वि/96 श्री नरेंद्र मामोडिया, अशोक नगर, उदयपुर
वि/97 श्री बाबूलाल कुमावत, झोटवाड़ा, जगपुर
वि/98 श्री रमेश मारवाल, खातीपुरा, जयपुर
वि/99 श्री प्रहलाद नारायण कुमावत, जयपुर
वि/100 श्री सत्यनारायण कुमावत, जगपुर
वि/101 श्री दीपेश टी. मॅडावरा, जयपुर
वि/102 श्री राकेश कुमावत, बरकत नगर, जयपुर
वि/103 श्री ओमप्रकाश कुमावत, जगपुर
वि/104 श्री रमेश चन्द ब्याड़वाल, नई दिल्ली
वि/105 डॉ. एन.के. कुमावत, लालकोठी, जयपुर
वि/106 श्री राम प्रसाद छापोला, झोटवाड़ा, जगपुर
वि/107 श्री गिरधारी लाल मिंघनवाल, उदयपुर
वि/108 श्री राकेश कुमावत (धनारिया), उदयपुर
वि/109 श्री बाबूलाल वर्मा (ब्याड़वाल), नई दिल्ली
वि/110 श्री कन्हैयालाल खण्डारिया, जयपुर
वि/111 डॉ. महेश कुमार जालवाल, जयपुर
वि/112 डॉ. श्रीमती श्यामा कुमावत, उदगपुर
वि/113 श्री महेश कुमार कुमावत, किशनगढ़
वि/114 श्री मुकेश वर्मा (मरोड़िया), जयपुर
वि/115 श्री जगकिशन कुमावत (सोकिल), चौमूं
वि/116 श्री गजेंद्र मारवाल, सांगानेर, जयपुर
वि/117 श्री सुनील वोंदवाल, वीकेआई, जयपुर
वि/118 श्री मदनलाल जलान्धरा, झोटवाड़ा, जगपुर
वि/119 श्री सुमित कुमार घोड़ेला, मुंबई
वि/120 श्री ओम प्रकाश का कारगवाल, ब्यावर
वि/121 श्री प्रेमचन्द कुमावत (बैरा), झोटवाड़ा, जगपुर
वि/122 श्री योगेश वर्मा, मुम्बई
वि/123 श्री राजेश धुंधारिया, डूंडलोद कॉलोनी, जयपुर
वि/124 श्री सुनील प्रकाश वर्मा, मुम्बई
वि/125 श्री उम्मेद सिंह नन्दीवाल पुत्र श्री जी.एस. नन्दीवाल, जयपुर
वि/126 श्री रामलाल वैथाड़िया
वि/127 श्री लोकेन्द्र बालोदिया, जगपुर
वि/128 श्री कुमार गौरव कुमावत, कोटा
वि/129 श्रीमती मेघना कुमावत, जयपुर

''कुमावत इंडिया'' पत्रिका परिवार की ओर से सभी दिवंगत आत्माओं को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

25 अक्टूबर श्री लालचन्द मारोठिया खातीपुरा, जयपुर
26 अक्टूबर श्री रवि कुमावत (सिरस्वा), कालवाड़ रोड, जयपुर
27 अक्टूबर श्री जय प्रकाश गठेलीवाल, कालवाड रोड, जयपुर
28 अक्टूबर श्री अजय कुमावत, जे.पी. अण्डरपास, जयपुर
28 अक्टूबर श्री योगेश धुंधारिया, डूंडलोद हाउस, जयपुर
28 अक्टूबर श्री रामपाल सोकिल, धोलीमण्डी, चौमूं
29 अक्टूबर श्री जग्गू जीपिलोदिया अरनिया, भीलवाड़ा
2 नवम्बर स्व. श्री किशनलाल कुमावत (भोड्या), जयपुर
4 नवम्बर श्री कैलाश चन्द मरमट, चाकसू, जयपुर
4 नवम्बर श्रीमती बीना कुमावत (भेड़ीवाल), पत्रकार कॉलोनी, जयपुर
4 नवम्बर श्री पृथ्वीराज अनावड़िया, पाली
5 नवम्बर श्रीमती सुशीला देवी अजमेरा, मुंदरी मोहल्ला, अजमेर
7 नवम्बर श्रीमती कमला देवी नराणिया, सोडाला, जयपुर

'कुमावत इंडिया' पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के तथ्य, आंकड़े व विचार लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं तथा इसकी मौलिकता व सत्यता के लिए सम्पादक मण्डल, पत्रिका, प्रकाशक एवं ट्रस्ट विधिक रूप से उत्तरदायी नहीं है।

समस्त विवादों के लिए न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।

7 नवम्बर श्री रमेश चन्द्र सांगानेर, जयपुर
7 नवम्बर श्रीमती नर्मदा, मानसरोवर, जयपुर
8 नवम्बर श्रीमती दुर्गावती बबेरवाल, रतनगढ़
8 नवम्बर श्रीमती दुर्गादेवी मारवाल, पोलोविक्ट्री, जयपुर
9 नवम्बर श्री गुरुदयाल कुण्डलवाल, लालरपुरा, जयपुर
9 नवम्बर श्री रामेश्वर लाल संगाठिया, सोडाला, जयपुर
11 नवम्बर श्री चन्द्र प्रकाश धुंधारिया, 22 गोदाम जयपुर
11 नवम्बर श्रीमती सुमित्रा देवी कुमावत, दुर्गापुरा, जयपुर
12 नवम्बर श्रीमती तारा देवी सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
12 नवम्बर श्री मनोहर लाल छापोला, सांगानेर, जयपुर
12 नवम्बर श्री मूल चंद उदयवाल,गोविंदपुरा, जयपुर
14 नवम्बर श्री प्रकाश कुमावत, कुचामन सिटी
15 नवम्बर श्री माणक जी कुमावत
15 नवम्बर श्री पूरणमल किरोड़ीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
15 नवम्बर श्री प्रेमचन्द राजोरा, रोजड़ी वाले
18 नवम्बर श्री भगवानेन्द्र कुमार जालवाल, हवा सड़क, जयपुर
18 नवम्बर श्रीमती कमला देवी भोड़िया, जयपुर
19 नवम्बर श्रीमती चन्दा देवी सिरोहिया, कुमावत कॉलोनी, झोटवाड़ा, जयपुर
20 नवम्बर श्री सुरेश जालवाल, ब्यावर
20 नवम्बर श्रीमती मनोहर देवी पत्नी वैद्य नानगराम सारड़ीवाल, जयपुर
20 नवम्बर श्री कृष्ण मुरारी केलगूरिया, जयपुर

विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची

युवतियाँ

शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				सम्पर्क नानी	स्थान नज़दीक
					स्वयं	माता	दादी		
M.A., NET	Asst. prof. collage	12.1.88	5'2''	अनावडिया	सांखला	अडानिया	देवतवाल	9460814992	जोधपुर
MCA	Asst. Manager PNB	10.11.90	5'3''	बडमुण्डा	परवा	बबेरीवाल	ऊँची	7014571450	बीकानेर
M.A., B.ed.	लेक्चरर	14.7.88	5'4''	किरोड़ीवाल	बिवाल	घोड़ेला	मारवाल	9828854830	सीकर
B.Com.	प्रा. टीचर	8.4.86	5'4''	मनेठ्या	खोरानिया	धुंधारिया	बासनीवाल	9351405202	जयपुर
M.A., B.Ed. (Eng.)	OAS राज्य सेवा	25.9.89	5'2''	मारवाल	भौंरीवाल	मारोठिया	किरोड़ीवाल	8769072611	झुंझुनूं
B.A.	-	10.12.97	5'4''	धुंधारिया	तूंदवाल	काज्या	भोड्या	8829018145	जयपुर
Dip. textile	तिरुपति कॉलेज	24.5.88	5'1''	भौंरोदिया	धुंधारिया	मारोठिया	तांगड़ा	9001904969	जयपुर
B.A., Diploma HR		12.10.57	-	दज्बीवाल	धुवारिया	मोरोठिया	कारगवाल	9821673437	मुज्बई
B.Com.	लेखाकार मुज्बई	27.7.93	5'1''	देवतवाल	नागा	किरोड़ीवाल	काज्या	9323951701	मुज्बई
M.Sc. (botny)	अध्यापिका	1.3.95	-	जारोल	रामायने	मांगरोली	चंदोर	7898612688	
B.Tech (Electro)		16.9.94	5'5''	नाहर	लारना	टांक	धनारिया	9414164232	उदयपुर
M.C.A.	असिस्टेंट प्रोफेसर	9.9.97	-	केकट्या	देवतवाल	नगारिया	बनावडिया	9462679521	उदयपुर
M.C.A.		23.7.88	5'5''	बबेरीवाल	कारगवाल	आसीवाल	जेठीवाल	7568951661	जयपुर
MCA	Web Developer	26.11.90	-	किरोड़ीवाल	राजोरिया	कुकड़वाल	केलूगरिया	9829294138	ज्यावर
CS में अध्ययनरत		31.3.2000	-	खनाडिया	गोटवाल	बातरा	भडानिया	9116425584	उदयपुर
MBA Finance	-	1.4.96	5'8''	रावडिया	टांक	मंधानिया	जाकड़ा	9827793775	मंदसोर
B.Sc. (Nursing)	AIIMS में nursing officer	22.12.95	-	दोगया	सिरोहिया	तूंदवाल	खुवाल	9950603773	जयपुर
B.A.	डांस टीचर	8.10.95	5'2''	राहोरिया	घोड़ेला	देवतवाल	तोंदवाल	9829762031	जयपुर
M.Com.,CA		मई 1991	5'1''	दौराया	जलांधरा	राहोरिया	अजमेरा	9414478256	जयपुर
M.Com.,B.Ed		19.3.91	5'4''	अडानिया	देवतवाल	मालिया	नागा	9314883733	जयपुर

युवक

शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				सम्पर्क नानी	स्थान नज़दीक
					स्वयं	माता	दादी		
Double MA	प्रोविजनल-फैन्सी स्टोर	1.1.86	5'9''	किरोड़ीवाल	नागा	धमानिया	कारगवाल, मालिया	9351383277	हिरनोदा
M.A., ADCA.	प्रा.कं. परचेज मैनेजर	1.9.92	5'4''	सिरोठा	ऊंटवाल	धनेरिया	माण्डेला	8209251087	उदयपुर
B.E. Civil.	स्वयं की कं.	17.12.91	5'7''	टांक	उदीवाल	खुराणिया	गोठवाल	9993115729	रतलाम
Hotel Management	degree	14.4.98	6'0''	घोड़ेला	बगडिया	दुगत		7898454806	देवास
B.A.	नेवी में	1.9.93	165''	तुंवल	पर्मवाल	मरोठिया	कुदाल	7073750623	सीकर
IInd yr.	स्वयं का रोजगार	30.11.86	5'10''	सारड़ीवाल	नेमीवाल	खाटूवाल	किरोड़ीवाल	9414232154	ज्यावर
B.Tech.(Elect)		18.7.92	6'0''	खोराणिया	सुखनीवाल	होदकास्या	सारड़ीवाल	8770443814	-
Elect. Diploma	सेवारत	8.5.90	5'10''	नागोरा	किरोड़ीवाल	रेनीवाल	मालिया	9660212572	ज्यावर
B.Tech (Mecnical)		12.6.93	5'11''	मारवाल	देवतवाल	किरोड़ीवाल	दोराया	9414821435	जयपुर
B.Tech(Arct.)	आर्किटेक्ट	25.10.95	5'8''	मारवाल	माचीवाल	ओस्तवाल	असोला	9929277325	ज्यावर
B.E. Civil	साइट इंजीनियर UAE	10.1.91	5'5''	दहीवाल	जलीन्द्रा	बालोदिया	बड़ीवाल	971551966123	सीकरUAE
M.E. Civil	इन्टीरीयर डिजाइनर	1.2.93	5'9''	बधाल	मारोठिया	मारवाल	बबेरीवाल	9422181859	पुना

नोट : 1. यदि आप अपनों की वैवाहिक जानकारी नि:शुल्क प्रकाशित कराना चाहते हैं तो उक्त कॉलम के अनुसार कार्यालय को जानकारी प्रेषित करें।

2. प्रदत्त सूचना के आधार पर यदि आपके किसी अपने का सम्बन्ध हो जाये तो कृपया 'कुमावत इंडिया' पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।

3. अच्छे रिश्तों के लिए दादी, नानी का गोत्र छोड़ा भी जा सकता है। अधिक जानकारी के लिए श्री हेमचन्द खड़गटा मो.नं. 9351682036 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

पोस्टकार्ड से भी कम कीमत पर आपका संदेश, विज्ञापन समस्त भारत में पहुँचाने का एकमात्र सशक्त माध्यम "कुमावत इंडिया पत्रिका"

समाज बन्धुओं से निवेदन है कि पत्रिका में प्रकाशन हेतु यदि आप प्रकाशन सामग्री:- समाचार, फोटो, लेख, कविता, प्रतिभाओं का परिचय, सामाजिक गतिविधियों आदि प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो कृपया kumawatindiapatrika@gmail.com पर मेल करें अथवा कार्यालय पते पर सामग्री प्रेषित करें। -सम्पादक

सूचना

तीन वर्षीय सदस्य अगस्त-अक्टूबर में क्र.सं. 001 से 165 समाप्त हो गई। कृपया शीघ्र नवीनीकरण करावें। सामाजिक संस्थाओं व ट्रस्टों को विज्ञापन में 10 प्रतिशत की छूट।

यदि आप अपनों की वैवाहिक जानकारी नि:शुल्क प्रकाशित कराना चाहते हैं तो सूचना निर्धारित कॉलम के अनुसार कार्यालय अथवा सम्पादक को प्रेषित करें।

पूर्वजों की याद को संजोये रखे

विनम्र निवेदन

हमारे पूर्वज जमीन, जायदाद, सोना, चांदी आदि अमूल्य सम्पत्ति छोड़कर स्वर्ग चले जाते हैं। हम व्यस्तता के कारण उनकी चिरस्मृति बनाये रखने में असमर्थ हो जाते हैं। कुमावत इण्डिया पत्रिका समाज बन्धु 4000 रु. शुल्क जमा कराकर अपने पूर्वज (माता-पिता, दादा-दादीजी, नाना-नानी) की पुण्य तिथि फोटो सहित 10 वर्ष तक 1/8 पेज पर मल्टीकलर में प्रकाशित करा सकते हैं। - सचिव

-: विशेष निवेदन :-

1. **शोक समाचार, तीये की बैठक के समाचारों में नाम के साथ कुमावत अवश्य लगाएं। क्योंकि गोत्र अन्य समाजों में भी मिलते हैं।**
2. **इस पत्रिका में हाल ही में दिवंगत की एक लाईन में श्रद्धांजलियाँ नि:शुल्क प्रकाशित की जाती है इस हेतु पत्रिका के कार्यालय को सूचित करने का कष्ट करें।**

जयपुर शहर व्यवसाय डाइरेक्ट्री का प्रकाशन शीघ्र

पत्रिका शीघ्र ही समाज की एक बहुउपयोगी **व्यवसाय डाइरेक्ट्री** का प्रकाशन करने जा रही है। यह डाइरेक्ट्री कोरोना महामारी के कारण लेट हो गई है। इसमें जयपुर नगर निगम क्षेत्र के व्यापारियों की दुकानों/संस्थानों/प्रोफेशनल्स का नाम, पता, फोन/मो. नं. आदि का एरिया वाईज प्रकाशन मार्च 2021 में किया जावेगा। इस प्रकाशन के प्रधान सम्पादक श्री हेमचन्द खड़गटा होंगे, समाज के व्यापारियों, उद्योगपतियों, प्रोफेशनल्स एवं सेवाप्रदाताओं से अनुरोध है कि वे अपने संस्थानों का विवरण एवं विज्ञापन श्री खड़गटा को देकर सहयोग करें।

डाइरेक्ट्री हेतु विज्ञापन की दरें निम्न प्रकार हैं :

साईज	दर रुपए	साईज	दर रुपए
विजिटिंग कार्ड	400/-	1/6	800/-
1/4	1000/-	1/2	1800/-
1 पेज (अन्दर)	3000/-	कवर पेज 2	4000/-
कवर पेज 3	5000/-	कवर पेज 4	10000/-

'कुमावत इंडिया' पत्रिका नहीं मिलने पर यहां सम्पर्क करें

डाक विभाग एवं अन्य के कारणों से आपको पत्रिका नहीं मिलती है तो कृपया अपने नजदीक सेन्टर पर जाकर प्राप्त करने का कष्ट करें तथा कृपया पत्रिका कार्यालय को पत्र, पोस्ट कार्ड आदि द्वारा सूचित करने का कष्ट करें।

जयपुर :

1. **लालकोठी बापूनगर**-श्री सुरेन्द्र नागा, सिवाड़ एरिया, बापूनगर, मो. 9414994006
2. **शिल्प कॉलोनी, झोटवाड़ा**- श्री महेश जलान्धरा मो. 9509344684
3. **कुमावत कॉलोनी झोटवाड़ा**- श्री सुरेन्द्र मारोठिया मो. 9314820385
4. **जयपुर शहर**-श्री राजसिंह बधानियां, म.नं. 454, मिश्र राजाजी का रास्ता, मो. 9414238799
5. **सांगानेर**-श्री भीमसिंह सिरोहिया, मालपुरा गेट मो. 9414359364
6. **मालवीयनगर**-श्रीचन्द्रप्रकाश अजमेरा मो. 9928088815
7. **22 गोदाम**-श्री चेतन बालोदिया, राज ब्लॉक, बी-81, रोड नं. 4 मो. 9414052736
8. **आदर्श नगर, तिलक नगर**-श्री शैलेन्द्र खड़गटा, खड़गटा भवन, मोती डूंगरी, जयपुर मो. 9351682036
9. **दहमी कलां, बगरू**-श्री चेनसुख बड़ीवाल, ग्लोबल एकाउन्ट सर्विस दहमी कलां बालाजी स्टेण्ड मो. 9929012987
10. **करधनी-कालवाड़ रोड**-श्री गणेश राम मारवाल, मै. जयश्री राम हार्डवेयर एण्ड पावर टूल्स टिम्बर दुकान नं. 90-91, करधनी शॉपिंग सेन्टर 9 दुकान कालवाड रोड, मो. 9828063267
11. **टोंक फाटक**- गणपति आर्ट एण्ड फ्रेम, 26 आदर्श बस्ती, मो. 8058157147
12. **बरकत नगर-महेश नगर**-विशाल कम्प्यूटर महेश नगर फाटक, मो. 9664386269

ब्यावर-श्री नरेन्द्र आर्य, मो. 8107944493

दिल्ली-श्रीराधेश्याम घासोलिया, मो. 9818711580

फुलेरा-श्री सुरेश नागा, जगदम्बा प्रिंटिंग प्रेस, बस स्टेण्ड के पास

नोट : अन्य समाज बन्धु स्वेच्छा से यह सेवा देना चाहें तो कार्यालय से सम्पर्क करें।

बधाई

हमारे प्रिय बड़े भ्राता एवं भाभीजी

श्री अनिल-मनीषा जी

(सुपुत्र श्रीमती सरला देवी-स्व. श्री सुभाष तोंदवाल)

की शादी की 25वीं वर्षगांठ

26 नवम्बर, 2020 के शुभ अवसर पर

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

शुभेच्छु

बहन-बहनोई : शकुन्तला-दौलतराम मामोड़िया

भान्जा-भानजी : आशीष, शिवानी मामोड़िया

वर्मा कॉलोनी, शास्त्री नगर, जयपुर

फर्म : न्यू दौलत बैण्ड, नगर निगम रोड, सांगानेर, जयपुर मो. 9829142369

बधाई

श्री दामोदर कुमावत

(पुत्र स्व. श्री नानूराम जी जलान्धरा एवं स्व. श्रीमती रामप्यारी देवी)

को जेडीए में डिप्टी कमिश्नर पद पर पदोन्नती होने पर

जलान्धरा परिवार **हार्दिक बधाई** देता है।

शुभेच्छु

पत्नी : श्रीमती संतोष देवी, **भाई-भाभी :** ओम प्रकाश-लक्ष्मी, ताराचन्द-भगवति, मोहन लाल-ऊषा, महेश-सुनीता, महेन्द्र-सुनीता, ईश्वर-कृष्णा, प्रभुनारायण-पुष्पा, **बहन-बहनोई :** रामरखी-सोहनलाल माचीवाल, सुशीला-रमेशचन्द भौरोंदिया, मीरा-कैलाश चन्द खाटूवाल, **पुत्र-पुत्रवधु :** पंकज-कविशा, संजय-दिव्या, राहुल, **भतीजा-भतीजा वधु :** जितेन्द्र-हेमा, दीपक-चन्द्रकला, राजेश-विमलेश, प्रमोद-डिम्पल, मनोज, विनोद, हिमांशु, अनिरूद्ध, मृणाल, यश, तेजस, **पुत्री-दामाद :** इन्दू-मुकेश धुंधारिया, नीलू-नरेन्द्र बारवाल, दीपिका-नरेश सिरोहिया, अंजली-भानु खोरानिया, काजल, टीशा, **पौत्र-पोत्री :** हर्ष, निखिल, सारांश, पूर्विक, अद्विक, ग्रन्थ, रैनी,

निवास : 190 ए, शिल्प कॉलोनी, झोटवाड़ा, जयपुर-303012
मो. 9828118789, 9509344684
फर्म : मै. महेशचन्द नानूराम, शिल्प कॉलोनी, झोटवाड़ा, जयपुर

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

जयपुर ग्रेटर वार्ड 135
से निर्दलीय पार्षद
श्री राजेश बालोदिया

शुभेच्छु

बाबूलाल ब्याड़वाल (अध्यक्ष बरकत नगर समिति),
सी.आर. कुमावत (गुरुजी-नीतिन स्कूल),
रमेश कुण्डलवाल, मिश्रीलाल बालोदिया, प्रेमचन्द
कुमावत, लोकेन्द्र बालोदिया, विजय मनेठिया, सूरज
बालोदिया, पवन बालोदिया, नटवर बालोदिया
एवं समस्त बालोदिया परिवार
बालोदियों की कोठी, किसान मार्ग, जयपुर

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

जयपुर हैरिटेज वार्ड 48
से बीजेपी के पार्षद निर्वाचित होने पर
श्री राजेश धुंधारिया

शुभेच्छु

शंकर लाल मामोडिया, गोपाल लाल जालवाल,
चेतन देवतवाल, शैलेन्द्र खड़गटा, पुष्पेन्द्र मारवाल,
नानगराम धुंधारिया, लालचंद धुंधारिया,
किस्तूरमल धुंधारिया, नन्दकिशोर कुमावत (मारवाल)
एवं समस्त परिवार

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

जयपुर हैरिटेज वार्ड 59
से बीजेपी की पार्षद निर्वाचित होने पर
श्रीमती कपिला कुमावत
(धर्मपत्नी श्री विजयपाल मारवाल)

शुभेच्छु

एडवोकेट मनीष कुमावत (खोवाल),
मनोज सिरस्वा, गगन तोंदवाल, नवल कुमावत,
महेन्द्र मारवाल, गुरुशरण मारवाल, ओमप्रकाश गैदर,
ज्ञानशरण मारवाल, पप्पू धुंधारिया (हलवाई)
एवं समस्त मारवाल परिवार
निदड़रावजी का रास्ता, जयपुर

श्री दामोदर कुमावत
(उपायुक्त, जयपुर विकास प्राधिकरण)

**पदोन्नति पर हार्दिक
बधाई व शुभकामनाएँ**

शुभेच्छु
पूरण चन्द बारावाल
प्लाट नं. 45, न्यू कॉलोनी, झोटवाड़ा,
जयपुर मो. 9460655633

18वीं पुण्यतिथि (18.11.2020)

स्व. मास्टर ईश्वरलाल जी वर्मा (जेम्स)

23वीं पुण्यतिथि (18.12.2020)

स्व. श्रीमती दुर्गा देवी

हम समस्त परिजन अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

स्व. 18.11.2002 स्व. 18.12.1996

श्रृद्धान्वत :

पुत्र-पुत्रवधु : इंजि. मोहन सिंह वर्मा - राज, मनमोहन - गुरुप्यारी, देवकीनन्दन-पुष्पा

पुत्री-दामाद : प्रेम-हुकम सिंह जलांधरा

पौत्र-पौत्रवधु : संजय-मीना, पंकज-उर्वशी, भास्कर-दीया (रोमिना)

पड़पौत्र : शुभ, सचिव, ध्रुव,आदित्य, महिरूद

ग्लोबल गेस्ट हाऊस सौजन्य से : **जेम्स मेडीकोज**

जेम्स भवन, जे.के. लॉन हॉस्पिटल के पास, चेतक मार्ग, जयपुर मो. 9828819623,9351803101

जेम्स भवन, जेके लोन अस्पताल के पास, चेतक मार्ग, जयपुर

हमारी पूज्यनीय माताजी

श्रीमती नारंगी देवी नागा

(धर्मत्नी स्व. श्री छोटे लाल जी नागा)

ढाणी नागान, फुलेरा का बैकुण्ठ धाम 21 नवम्बर, 2020 को हो जाने पर अरुपूरित श्रद्धांजलि

श्रद्धावन्त

पुत्री-दामाद : सम्पत-माणक चन्द किरोड़ीवाल (कुचामन), नर्बदा-शीतल प्रसाद मारवाल (जयपुर)

श्रद्धांजलि

श्रीमती मनफूली देवी	श्री लालचन्द मंडावरा
स्व. 7.19.991	स्व. 29.11.1993
29वीं पुण्यतिथि	17वीं पुण्यतिथि
7.10.2020	29.11.2020

श्रद्धान्वत

पुत्र-पुत्रवधु : सुमेरचन्द-सीतादेवी

पौत्र-पौत्रवधु: विनोद-चन्द्रदेवी, तरूण-विनीता, अमित-ऋतु

पौत्री-दामाद : स्व. नमिता-विमल अनावडिया, सुमिता-सतीश मामोडिया

पड़पौत्र-पड़पौत्री : हितेश, शिवानी, प्रीत, शिवम्, रिया

पुत्री-दामाद: दमयन्ती-स्व. चन्दालाल बालोदिया

Kajaria Star प्रतिष्ठान
Opp. Shri Krishna Paradise, Lalapura, Vaishal Nagar West, Jaipur-302034

Kajaria
9, Sohan Nagar-B, Manyawas, Mansarovar, Jaipur-20

विनोद ट्रेडिंग कम्पनी, फतेहपुर रोड, सीकर मो. : 9314040045

38, केशव नगर-II, हवा सड़क, जयपुर मो. : 9414040045

श्रद्धांजलि

9.5.1949-10 नवम्बर, 2017

स्व. श्री गुलाब चन्द बालोदिया

पुत्र स्व. श्री विजय लाल बालोदिया की

तृतीय पुण्य तिथि

दिनांक 10 नवम्बर, 2020 पर हार्दिक श्रद्धांजलि

आपका मिलनसार, संघर्षपूर्ण, त्यागमय एवं प्रेरणादायक आदर्श हम सभी का सदैव मार्गदर्शन करता रहेगा

श्रद्धानवत

श्रीमती गायत्री देवी (धर्मपत्नी)

पुत्र-पुत्र वधू : गजेन्द्र बालोदिया-गरिमा, लोकेन्द्र बालोदिया-हनिता

पुत्री: रजनी (धर्मपत्नी स्व. डॉ. नन्दकिशोर)

पौत्र-पौत्री: हार्दिक, श्रजुल, दर्शिल, हीती

ए-1 विजय विलास, किसान मार्ग, बरकत नगर टोंक फाटक, जयपुर-302015

मो. 9829212772, 9829009036

congratulations

25 glorious years

of marriage Anil-Manisha
and there are many more to come
May your life always be this happy

26th November

With Best Wishes From

Sarla Devi
W/o Late Shri Subhash Kumawat
Sunil & Bhawana Kumawat
Milind Radhika, Lehika, Nikhil

28, Ashirwad, Road No. 1, Shiv Nagar
V.K.I. Area, Opp. Vivekanand Sr. Sec. School, Jaipur
Mobile : 99289-14363, 98290-14363

जयपुर नगर निगम चुनाव में कुमावत समाज की 3 पार्षद निर्वाचित होने पर

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्री राजेश धुंधारिया
जयपुर हेरिटेज वार्ड 48
भाजपा

श्रीमती कपिला कुमावत
(धर्मपत्नी विजयपाल मारवाल)
जयपुर हैरिटेज वार्ड 59, भाजपा

श्री राजेश बालोदिया
जयपुर ग्रेटर वार्ड 135
निर्दलीय-कांग्रेस समर्थित

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

कुमावत (खड़गटा-धुंधारिया) जनमंगल सेवा ट्रस्ट

हेमचन्द खड़गटा	कस्तूरमल कुमावत	चेतन कुमावत (धुंधारिया)	लालचन्द धुंधारिया
अध्यक्ष	सचिव	उपाध्यक्ष	कोषाध्यक्ष

ट्रस्टी : रेखा सिंह बेयाड़िया, निकिता राजोरिया, सतीश खड़गटा, शैलेन्द्र खड़गटा, मोहित धुंधारिया

85, अशोक विहार विस्तार, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर-302018
रजि. कार्यालय-2806, खड़गटा, मोती डूंगरी, जयपुर-302004

VINOD BALODIA
CHETAN BALODIA

SUNIL BALODIA
RAVI BALODIA

A COMPLETE PRINTING SOLUTION

Since-1977

Raj Blocks

OFFSET PRINTERS

Nr. Sai Baba Temple, Choura Rasta, Jaipur
Mob: 9829059312, 9829436551
E-mail : rajblocks@yahoo.com

PRESS

B-81, Road No.4, Kartarpura Ind. Area,
22 Godown, Jaipur-302019

Ph.: 0141-4022538 • Mob.: 9414052736 . 9928910068
E-mail:rajprintlinejpr@gmail.com • rajblocksjpr@gmail.com

Shubh Laxmi Crane & Engineers

(Formally Know as Shri Laxmi Crane Service)

All India Equipments Rental Service Provider

Jai Kishan Kumawat
+91- 9829125428
+91- 9887011175

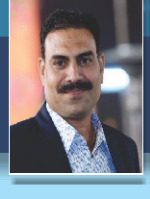

Shankar Lal Kumawat
+91- 9887227775

Mukesh Kumar Kumawat
+91- 9887337775

H.O.
Shree Heera Bhawan, Dholi Mandi
Chomu-303702 Distt. Jaipur (Rajasthan)

B.O.
Near Patwar Bhawan,Village - Kawas
Distt. Barmer - 344035 (Rajasthan)

shreelaxmicranes@gmail.com
shubhlaxmicrane@gmail.com

www : shrilaxmicrane.com

Graphic By : Art point # 9928064300

RNI - RAJHIN/2017/74285

प्रेषिति

प्रेषक : हंसचन्द्र कुमावत, प्रकाशक
कुमावत प्रगति ट्रस्ट, म.न. 2806, खड़गटा भवन,
मोती डूंगरी, जयपुर-302004